

आर्य जगत्

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 29 अक्टूबर 2017

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र

सप्ताह रविवार, 29 अक्टूबर 2017 से 04 नवम्बर 2017

कार्तिक शु.- 09 • वि० सं०-2074 • वर्ष 58, अंक 94, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 193 • सृष्टि-संवत् 1,96,08,53,117 • पृ.सं. 1-12 • इस अंक का मूल्य - 2.00 रुपये

म्यांमार में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन सम्पन्न

आर्य रत्न डॉ पूनम सूरी ने भेजा विशेष सन्देश

दिल्ली में सम्पन्न हुए अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के निर्णयानुसार 11 वाँ सम्मेलन 6, 7, 8 अक्टूबर 2017 को म्यांमार में आर्य समाज की स्थापना के एक शताब्दी पश्चात् माण्डले में किया गया। भारत से लगभग 160 तथा मॉरिशस, अमेरिका, न्यूजीलैण्ड, केनेडा, नेपाल आदि स्थानों से लगभग 50 प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

कार्यक्रम माण्डले शहर के महत्त्वपूर्ण आबादी वाले तथा नगर के प्रसिद्ध स्थान अम्बिका मन्दिर में आयोजित किया गया। अत्यन्त सुविधाजनक मन्दिर के मैदान में सुन्दर साज सज्जा के साथ भव्य यज्ञशाला, पाण्डाल और आकर्षक मंच का निर्माण स्वतः ही सबको अपनी ओर आकर्षित कर रहा था। जो भी देखता वह सराहना किए बिना नहीं रहता। साहित्य विक्रय तथा अन्य सामग्री विक्रय स्टॉल भी बने हुए थे। इस प्रकार का आयोजन बर्मा के लिए पहला ही आयोजन था। म्यांमार सभा के प्रधान श्री अशोक क्षेत्रपाल और पूरी टीम जिसमें महिलाएं, नवयुवक, बालक-बालिकाएं सभी पूरी निष्ठा और पूर्ण शक्ति से लगे थे। यह एक विशेषता यहां सबने देखी जो प्रेरणास्पद थी।

म्यांमार सभा का अनुमान था लगभग 700-800 व्यक्ति सम्मेलन में आवेंगे किन्तु सम्मेलन में भाग लेने हेतु आशा से अधिक 1800 व्यक्तियों का पंजीयन कार्यक्रम के पूर्व ही हो चुका था। 5 अक्टूबर की रात्रि से ही आगन्तुक आना प्रारंभ हो गये थे। सम्मेलन में विद्वान, संन्यासी, गायक,



वक्ता बड़ी संख्या में पधारे थे जिसमें प्रमुख रूप से स्वामी धर्मानन्द (आमसेना), स्वामी देवव्रत, स्वामी सुमेधानन्द, स्वामी राजेन्द्र, आर्य ज्ञानेश्वर, डॉ. सोमदेव शास्त्री, आचार्य नन्दिता शास्त्री, डॉ. रामकृष्णा शास्त्री, आचार्य सनत कुमार, आचार्य आनन्द प्रकाश, डॉ. सत्यकाम शर्मा, प्रो. ओमकुमार आर्य आदि के द्वारा सम्मेलन को सम्बोधित किया गया। सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में माण्डले के मुख्यमंत्री और मन्त्री मण्डल के अनेक विभागों के मंत्री, भारत के राजदूत, मेयर, नेता तथा आर.एस.एस., सनातन धर्म सेवक संघ, हिन्दू संगठन के अनेक नेता उपस्थित हुए।

महात्मा आनन्द स्वामी जी के सुपौत्र श्री पूनम सूरी जी ने इस सम्मेलन की अभूतपूर्व सफलता के लिए अपना शुभकामनाओं भरा संदेश भेजा, जिसे मंच से आदर सहित पढ़कर सुनाया गया। म्यांमार में आर्यसमाज को दशा और दिशा देने में महात्मा आनन्द स्वामी जी का बहुत बड़ा हाथ रहा। आज भी उनका नाम सुनकर वहां के आर्य समुदाय

के मस्तक अत्यंत श्रद्धा से झुक जाते हैं। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा (भारत) के प्रधान डॉ. पूनम सूरी का संदेश उपस्थिति ने अत्यन्त श्रद्धा से सुना।

ओ३म् ध्वजारोहण सभा प्रधान जी द्वारा, दूसरा ध्वज स्वामी सुमेधानन्द द्वारा तथा म्यांमार देश का ध्वज म्यांमार सभा प्रधान श्री अशोक क्षेत्रपाल द्वारा किया गया। ध्वजारोहण के पश्चात् मुख्य मंच पर मुख्यमंत्री तथा अन्य शासकीय उच्चधिकारियों द्वारा दीप प्रज्ज्वलित किया गया। कार्यक्रम में आशा से कहीं अधिक उपस्थिति हो गई, पूरा पाण्डाल भर गया खड़े रहने का स्थान भी नहीं बचा।

प्रतिदिन प्रातः 5 से 6 तक स्वामी देवव्रत द्वारा योग आसन प्राणायाम प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें बड़ी संख्या में उपस्थिति होती थी। प्रतिदिन प्रातः सांय यज्ञ होता रहा, यज्ञ की ब्रह्मा आचार्या नन्दिता शास्त्री थीं। पंच कुण्डीय यज्ञ में 40 से 50 यजमान और उनके आसपास सैकड़ों की संख्या में श्रद्धालु बैठकर यज्ञ

का आनन्द ले रहे थे। विभिन्न सम्मेलनों का आयोजन 4 सत्रों में होता रहा, जिसमें वेद, आर्य समाज, महिला आर्यसमाज के सैद्धान्तिक व अन्धविश्वास निवारण विषयों पर विद्वानों ने चर्चा की।

आकर्षण था म्यांमार के अनेक समूहों द्वारा आकर्षक भजनों की संगीतमयी प्रस्तुति। प्रातः से रात्रि (भजन संध्या) तक लगभग 40 से 50 भजनों के प्रस्तुति मॉरिशस व म्यांमार देश की महिलाओं, नवयुवकों व छोटे-छोटे बच्चों द्वारा दी गई। विशेष आकर्षण था- 100 स्थानीय व्यक्तियों ने एक साथ अपने-अपने हवन कुण्ड में सामूहिक यज्ञ किया। आचार्या नन्दिता शास्त्री ने अनेक व्यक्तियों को नित्य यज्ञ करने की प्रेरणा दी, परिणाम स्वरूप अनेक व्यक्तियों ने दैनिक यज्ञ करने का संकल्प लिया।

गुरुकुल स्थापना- म्यांमार में गुरुकुल स्थापना का निर्णय लिया गया। इस हेतु

शेष पृष्ठ 11 पर



स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। - स. प्र. समु. 9
संपादक - पूनम सूरी

आर्य जगत्

सप्ताह रविवार, 29 अक्टूबर 2017 से 04 नवम्बर 2017

दोनों हाथों से भर-भरकर दे

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

दिवो विष्ण उत वा पृथिव्याः, महो विष्ण उरोरन्तरिक्षात्।
हस्तौ पृणस्व बहुभिर्वसव्यैः, आप्रयच्छ दाक्षिणादोत सव्यात्॥

अथर्व 7.26.8

ऋषिः मेधातिथिः। देवता विष्णुः। छन्दः त्रिष्टुप्।

● (विष्णो) हे स्रव्यापक परमात्मन्! (दिव) द्युलोक से (उत वा) और (पृथिव्याः) पृथिवी-लोक से [तथा] (विष्णो) हे विश्वान्त्यामिन्! यज्ञ के देव! (महः) महनीय (उरोः) विस्तीर्ण (अन्तरिक्षात्) अन्तरिक्ष-लोक से (बहुभिः) बहुत-से (वसव्यैः) ऐश्वर्य-समूहों से (हस्तौ) दोनों को (पृणस्व) भर ले। (दाक्षिणात्) दाहिने हाथ से (आ प्रयच्छ) दान दे (उत) और (सव्यात्) बाएँ से [भी] (आ प्रयच्छ) दान दे।

● हे विष्णु! हे सर्वव्यापक! हे विश्वान्त्यामिन्! हे विश्व-ब्रह्माण्ड के स्वामिन्! तुम अपूर्व धनाधीश हो। विश्व के द्युलोक, अन्तरिक्ष-लोक और पृथिवी-लोक में जो धन बिखरा पड़ा है, वह सब तुम्हारा ही है। अतः तुम धन-कुबेर हो। एक और तुम धनपति हो और हम अकिंचन हैं। अतः हम चाहते हैं कि तुम अपने कोष में से दाहिने-बाएँ दोनों हाथों से भर-भरकर हमें दान दो। तुम्हारे रचे द्यु-लोक में प्रकाश का अनुपम पारावार भरा पड़ा है। वह प्रकाश तुम हमें भी प्रदान करो। तुम्हारे रचे विशाल अन्तरिक्ष-लोक में वायु और पर्जन्य का सागर उमड़ रहा है। उसमें से हमें भी प्राण-वायु और अमृतमय वृष्टि-जल प्रदान करो। तुम्हारे रचे पृथिवी-लोक से सुवर्ण, रजत, ताम्र अयस, हीरे, मोती आदि ऐश्वर्यों की निधियाँ भरी हुई हैं। वे ऐश्वर्य तुम हमें भी प्रदान करो। अल्प मात्रा में नहीं, प्रचुर मात्रा में प्रदान करो, क्योंकि हम ऐश्वर्यमय जीवन जीने की ही साध लिये हुए हैं।

पर हे विश्वव्यापी देव! हम केवल इन भौतिक ऐश्वर्यों का ही पाकर सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहते। हम शरीरस्थ द्यु-लोक, अन्तरिक्ष-लोक और पृथिवी-लोक के ऐश्वर्यों को भी पाने के लिए आतुर हो रहे हैं। हमारा अन्नमय कोश ही पृथिवी-लोक है,

जिसमें शरीर की त्वचा से लेकर अस्थि-पर्यन्त सब ढाँचा आ जाती है। असका ऐश्वर्य है शारीरिक स्वास्थ्य और शारीरिक बल, जिसके बिना मनुष्य का जीवन-यापन, व्यान, उदान, समा, इन पाँचों से तथा कर्मेन्द्रियों से मिलकर प्राणमय कोश बनता है। इसका ऐश्वर्य है प्राण, अपानन आदि क्रियाओं का समुचित रूप से होते रहना तथा हस्त-पादादि कर्मेन्द्रियों को कार्य-क्षम बने रहना। मन और ज्ञानेन्द्रियों से मिलकर मनोमय कोश बनता है। इसका ऐश्वर्य है मन के माध्यम से ज्ञानेन्द्रियों का ज्ञान-प्राप्ति में सहायता होना तथा मन का सत्यसंकल्प करना। ज्ञानेन्द्रियों-सहित बुद्धि विज्ञानमयकोश कहलाता है। इसका ऐश्वर्य है ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त ज्ञान पर ऊहापोह करके निश्चयात्मक ज्ञान अर्जित करना। आनन्दमय कोश द्यु-लोक है, जहाँ हृदयपुरी में प्रतिष्ठित आत्मा के अन्दर ब्रह्म का वास है। इसका ऐश्वर्य है ब्रह्मानन्द की प्राप्ति। हे विष्णुदेव! तुम इन समस्त ऐश्वर्यों से भी भरपूर करने की कृपा करते रहो।

हे जगत्पिता! तुम निरैश्वर्य की अवस्था से पार करके हमें अधिकाधिक ऐश्वर्य प्रदान कर कृतार्थ करते रहो।

□

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

अमृत-पान

● महात्मा आनन्द स्वामी



स्वामी जी ने ब्लाटिंग पेपर का उदाहरण देते हुए कहा कि जो ब्लाटिंग पेपर की भाँति काले मुख वाले होकर भस्म होना नहीं चाहते, जो आग की भाँति प्रज्ज्वलित होना चाहते हैं, जो आग की भाँति शुद्ध-पवित्र रहना चाहते हैं, जो दूसरों के अपराधों, पापों और गलतियों को नष्ट करके स्वयं भी प्रकाशमान और सुखी होना चाहते हैं, उन्हें ब्लाटिंग पेपर नहीं, अपितु आग बनना होगा।

दूसरी कथा में स्वामी जी ने मिलर के ताले का उदाहरण देते हुए कहा कि सन्दूकों के भीतर जीवन और धन संकट में है और प्रतिदिन रोते-पीटते, चिल्लाते और बिलबिलाते जो लोग दिखाई देते हैं, वे स्पष्ट बतलाते हैं कि इन सन्दूकों के अन्दर लोगों का दम घुट रहा है। यदि जान बचानी है तो अपनी माता को पुकारो। अनुनय और विनय करो उस परम प्यारी माता के आगे, जो इन मिलर के तालों से इन बन्द हुए सन्दूकों में से आपको निकाल सकती हैं। पश्चात्ताप से, अनुनय विनय से, पुकार और प्रार्थना से परमात्मा आप कृपा करेंगे और आप विनष्ट से बच जाएँगे।

आगे पढ़ेंगे दो लघु कथाएँ

चार वस्तुएँ चाहिएँ

एक राजा ने दूसरे देश के राजा पर असंख्य सेना लेकर आक्रमण किया। दोनों ओर की सेनाएँ अत्यन्त उत्साह से लड़ने लगीं। युद्ध प्रचण्ड हो उठा। सिर कट-कटकर भूमि पर गिरने लगे। थोड़ी ही देर में सुन्दर युवक भूमि पर लेटने लगे। आक्रमण करने वाले राजा की सेना ने अब आगे बढ़ना आरम्भ किया और दूसरे राजा को भी कत्ल कर डाला। अब तो आक्रमणकारी राजा विजय का घोष करता हुआ आगे बढ़ा और उसने देश पर अधिकार कर लिया।

परन्तु वह नहीं चाहता था कि मैं सदा यहीं रहूँ, प्रत्युत वह अपने देश को वापस लौटना चाहता था, इसलिए उसने पूछा कि क्या मृतक राजा के वंश में कोई व्यक्ति है। लोगों से पता लगा कि उसके वंश में कोई भी व्यक्ति जीवित नहीं है। हाँ, उसकी रिश्तेदारी का एक व्यक्ति है।

राजा- वह कहाँ रहता है?

उत्तर- वह संसार को त्याग चुका है और विरक्त होकर जंगल में रहता है।

राजा- उसे बुलाकर इस स्थान पर लाना चाहिए।

कुछ प्रतिष्ठित व्यक्ति उस विरक्त को बुलाने जंगल में गये और उस विरक्त को कहा कि राजा आपको बुलाता है, परन्तु उसने आने से इन्कार कर दिया। इसी प्रकार तीन-चार बार व्यक्ति उसके पास भेजे गए, परन्तु वह नहीं आया।

अब तो राजा स्वयं उसके पास गया और कहने लगा। मैं किसी स्वार्थ से

आपको नहीं बुलाता था, प्रत्युत इसलिए बुलाता था कि यह प्रदेश आपको दे दूँ।

विरक्त- मुझे किसी वस्तु की आवश्यकता नहीं है और न ही राज लेना चाहता हूँ।

राजा- यदि राज लेना नहीं चाहते तो कोई और वस्तु माँगो, मैं उपस्थित कर दूँगा।

विरक्त- नहीं, मुझे कुछ नहीं चाहिए।

राजा- तो भी इस जंगल में रहते हुए कुटिया की, रक्षक की, खान-पान की वस्तुओं की- जिस वस्तु की आवश्यकता हो बतलाइए।

विरक्त- अच्छा आप बहुत आग्रह करते हैं तो मुझे निम्न वस्तुएँ दे दीजिए-

1. एक तो वह जीवन जिसके साथ मरना न हो।

2. दूसरी वह प्रसन्नता जिसके साथ रज्ज=गम, कष्ट-क्लेश न हो।

3. तीसरी वह जवानी जिसके साथ बुढ़ापा न हो।

4. चौथी वह सुख जिसके साथ दुःख न हो।

राजा- इन चारों में से एक भी मेरे पास नहीं। ये तो मनुष्य की सामर्थ्य से बाहर हैं। इन्हें तो केवल परमेश्वर ही दे सकता है, दूसरा कोई नहीं दे सकता।

विरक्त- मैंने भी इसलिए अपने प्रभु का दामन पकड़ा है- उसका आश्रय लिया है और वही मुझे ये वस्तुएँ देगा। मुझे अन्य

शेष पृष्ठ 07 पर

क्या 'महर्षि दयानन्द का एक अलभ्य शास्त्रार्थ' वास्तव में महर्षि दयानन्द का शास्त्रार्थ है?

● भावेश मेरजा

आर्य समाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा 2012 ई. में प्रकाशित दयानन्द ग्रन्थमाला के तृतीय संस्करण के तृतीय भाग में कलकत्ता-शास्त्रार्थ को स्वामी दयानन्द के शास्त्रार्थ के रूप में सम्मिलित कर प्रकाशित किया गया है। यह शास्त्रार्थ प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु ने 'रसाला एक आर्य' पुस्तक को उर्दू से हिन्दी में अनूदित एवं सम्पादित किया है और उन्होंने इसकी भूमिका लिखी है। परोपकारिणी सभा के इस प्रकाशन में इस शास्त्रार्थ के शीर्षक को स्पष्ट करते हुए नीचे लिखा गया है— "22 जनवरी, 1881 को कलकत्ता विश्वविद्यालय के सीनेट हाल में पौराणिक विद्वानों द्वारा किए गए प्रश्नों का महर्षि दयानन्द द्वारा अन्य से लिखवाया गया उत्तर"। स्वाभाविक है कि इससे यही प्रकट होता है कि इस शास्त्रार्थ में उपलब्ध उत्तर मूलतः स्वामी दयानन्द द्वारा लिखवाए गए हैं। परन्तु ऐसा अनुमान करना उचित नहीं है, क्योंकि प्रमाणों से इसकी सिद्धि नहीं होती है।

पण्डित युधिष्ठिर मीमांसक की धारणा अथवा अनुमान

स्वामी दयानन्द के मन्तव्यों के विरोध में कलकत्ता में पौराणिक पण्डितों द्वारा आयोजित आर्य सन्मार्ग सन्दर्शिनी सभा के प्रश्नों के उत्तर के सम्बन्ध में सर्वप्रथम युधिष्ठिर मीमांसक ने अपनी एक टिप्पणी में लिखा था — "इन उत्तरों का प्रत्युत्तर आर्यसमाज कलकत्ता की ओर से दिया गया। प्रत्युत्तर अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं। ये उत्तर किस विद्वान् ने दिए हमें ज्ञात न हो सका।" (ऋषि दयानन्द सरस्वती के पत्र और विज्ञापन, द्वितीय भाग, तृतीय संस्करण, पृष्ठ 493, पाद-टिप्पणी) उन्होंने आगे इसी विषय पर लिखा था — "उक्त शीर्षक से पं. लेखराम कृत जी. च. (जीवनचरित्र) हिन्दी सं. पृष्ठ 671-696 तक जो अंश छपा है, उसका ऋ. द. के पत्र और विज्ञापन के साथ सीधा कुछ भी सम्बन्ध न होने पर भी हम इसे यहाँ (पत्र और विज्ञापन के) ग्रन्थ में छाप रहे हैं। इसका कारण यह है कि कलकत्ता के पण्डितों ने उक्त सभा करके ऋ. दयानन्द के कतिपय सिद्धान्तों पर जो निर्णय लिया था उसका उत्तर आर्यसमाज कलकत्ता ने दिया था। इसके

सम्बन्ध में जी. च. (लेखराम) पृ. 672 पर लिखा है — 'समस्त उत्तर और प्रश्न उनके उन प्रत्युत्तरों सहित जो आर्यसमाज और स्वामी दयानन्द जी की ओर से दिए गए थे, पाठकों की भेंट करते हैं।' इससे विदित होता है कि ये उत्तर ऋ. दयानन्द के लिखे हुए हैं। इतना ही नहीं, उक्त प्रश्नों के जो उत्तर दिए गए हैं वे अत्यन्त प्रौढ़ हैं। जहाँ तक हम जानते हैं उस समय कलकत्ता में कोई ऐसा स्वामी जी का अनुयायी विद्वान् नहीं था, जो ऐसे प्रौढ़ उत्तर दे सकें।" (वही, पृ. 863) युधिष्ठिर मीमांसक ने यह भी लिखा है — "अतः सम्भव है कि ऋ. द. ने 31 मार्च (1881) के पश्चात् कलकत्ता की सभा में किए गए आक्षेपों के उत्तर लिखकर आर्यसमाज कलकत्ता को भेजे होंगे।" (वही, पृ. 863)

युधिष्ठिर मीमांसक ने जो ये अनुमान किए हैं कि इन उत्तरों का प्रत्युत्तर आर्यसमाज कलकत्ता की ओर से दिया गया और स्वामी जी ने यह उत्तर लिखकर आर्यसमाज कलकत्ता को भेजे होंगे, निश्चित रूप से प्रमाणशून्य हैं, क्योंकि उस समय अर्थात् 1881 तक तो कलकत्ता में आर्यसमाज स्थापित ही नहीं हुआ था। राजेन्द्र जिज्ञासु ने भी युधिष्ठिर मीमांसक की इन बातों पर कुछ भी विचार किए बिना झट अपनी टिप्पणी लिख दी — "पहले कलकत्ता से ये उत्तर छपे थे।" (पण्डित लक्ष्मण आर्योपदेशक रचित महर्षि दयानन्द सरस्वती का सम्पूर्ण जीवनचरित्र, भाग-2, पृ. 466)

आर्यसमाज कलकत्ता के मासिक मुखपत्र 'आर्यसंसार' के 1989 के वार्षिक विशेषांक के अन्त में आर्यसमाज कलकत्ता का संक्षिप्त विवरण दिया गया है। उसमें स्पष्ट लिखा है — "आर्यसमाज कलकत्ता की स्थापना 1885 में हुई।" (पृ. 405, तत्कालीन सम्पादक — प्रो. उमाकान्त उपाध्याय)

लक्ष्मण आर्योपदेशक कृत 'महर्षि दयानन्द सरस्वती का सम्पूर्ण जीवनचरित्र' के हिन्दी अनुवाद के प्रथम भाग के तीसरे परिशिष्ट में इसके अनुवादक तथा सम्पादक राजेन्द्र जिज्ञासु ने 'महर्षि दयानन्द जी के बलिदान के समय विद्यमान आर्यसमाजों की सूची' दी है। इस सूची में भी आर्यसमाज कलकत्ता का कहीं उल्लेख नहीं है। डॉ. सत्यकेतु विद्यालंकार रचित 'आर्यसमाज

का इतिहास' के प्रथम भाग के परिशिष्ट -1 में दी गई 'सन् 1883 तक स्थापित आर्यसमाजों की सूची' में भी कलकत्ता आर्यसमाज का उल्लेख नहीं है। इससे यह सिद्ध होता है कि स्वामी जी के देहावसान अर्थात् 30 अक्टूबर 1883 पर्यन्त कलकत्ता में कोई आर्यसमाज स्थापित नहीं हुआ था। इसलिए 1881 में आयोजित कलकत्ता की आर्य सन्मार्ग सन्दर्शिनी सभा के प्रश्नों के प्रत्युत्तर आर्यसमाज कलकत्ता की ओर से दिए जाने की या छपने की बात पूर्णतया निराधार सिद्ध होती है।

महर्षि दयानन्द का एक अलभ्य शास्त्रार्थ

राजेन्द्र जिज्ञासु अपनी पुस्तकों में ऐसा लिखते हैं कि जब वे अन्तिम बार युधिष्ठिर मीमांसक को बहालगढ़ में मिले थे तब युधिष्ठिर मीमांसक ने उनसे कहा — "प्रत्युत्तर पढ़कर ऐसा लगता है कि यह उत्तर ला. साईदास जी द्वारा नहीं हो सकता। ला. साईदास ने सम्पादन कर दिया। ये उत्तर अत्यन्त पाण्डित्यपूर्ण हैं। ऋषि जी से पूछकर ही उत्तर दिए गए लगते हैं।" (महर्षि दयानन्द का एक अलभ्य शास्त्रार्थ, पृ. 13) इसी प्रसंग में युधिष्ठिर मीमांसक द्वारा कही गई बात को राजेन्द्र जिज्ञासु ने अन्य स्थान पर इस प्रकार प्रस्तुत किया है — "आर्यसमाज को बता दो कि 'एक आर्य' में दिए गए उत्तर महर्षि से पूछ कर दिए गए हैं। कोई असाधारण विद्वान् ही ऐसे उत्तर दे सकता है।... मैंने 25 वर्ष पर्यन्त गुरुमुख से विद्या पाई। मैं अपने ज्ञान व अनुभव के आधार पर आर्य जगत् को आप द्वारा यह बताना चाहता हूँ कि पण्डितों की बातों का उत्तर महर्षि दयानन्द की कोटि का विद्वान् ही दे सकता है। अतः सब काम छोड़कर 'रसाला एक आर्य' पुस्तक की खोज कीजिए।" (म. द. स. का सम्पूर्ण जीवनचरित्र, भाग-2, पृ. 464-465) युधिष्ठिर मीमांसक ने राजेन्द्र जिज्ञासु से उपर्युक्त बातें कीं इसका इससे भिन्न अन्य कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है। राजेन्द्र जिज्ञासु को तत्काल यह पुस्तक मिल भी गई। वे लिखते हैं — "उनके (युधिष्ठिर मीमांसक के) शरीर छोड़ने के कुछ ही मास के पश्चात् यह दुर्लभ पुस्तक हमें अनायास ही और धक्के से प्राप्त हो गई।" (वही, पृ. 462)

राजेन्द्र जिज्ञासु ने 'रसाला एक आर्य' का हिन्दी अनुवाद कर इसे महर्षि दयानन्द

का एक अलभ्य शास्त्रार्थ शीर्षक से तथा टाईटल पर अपने नाम के साथ 2002 में अबोहर से प्रकाशित कर दिया। इस पुस्तक में युधिष्ठिर मीमांसक के द्वारा व्यक्त की गई उपर्युक्त प्रकल्पना एवं बहालगढ़ में उनसे हुई उस भेंट के दौरान हुई बातों को आधार बनाकर यह बताने का प्रयास किया है कि कलकत्ता की आर्य सन्मार्ग सन्दर्शिनी सभा के प्रश्नों के उत्तर स्वामी जी द्वारा अन्य से लिखवाए गए हैं। परोपकारिणी सभा द्वारा दयानन्द ग्रन्थमाला के तृतीय भाग में प्रकाशित कलकत्ता शास्त्रार्थ की सामग्री भी वही है जो महर्षि दयानन्द का एक अलभ्य शास्त्रार्थ में है।

राजेन्द्र जिज्ञासु का मत है कि — "अब पुस्तक ('रसाला एक आर्य') हमने एक से अधिक बार पढ़ी है। हमें भी यही लगता है कि किसी प्रकार ऋषि जी से सम्पर्क करके कोलकाता की सभा की व्यवस्था के प्रत्युत्तर दिए गए। इस दृष्टि से यह शास्त्रार्थ ऋषि दयानन्द व पण्डितों के मध्य हुआ।" (महर्षि दयानन्द का एक अलभ्य शास्त्रार्थ, पृ. 13) परन्तु यह राजेन्द्र जिज्ञासु का व्यक्तिगत अनुमान मात्र है, क्योंकि पुस्तक में ऐसा एक भी प्रमाण उपलब्ध नहीं है कि जिससे यह प्रकट होता हो कि ये प्रत्युत्तर स्वामी जी से सम्पर्क करके दिए गए हैं।

राजेन्द्र जिज्ञासु ने महर्षि दयानन्द का एक अलभ्य शास्त्रार्थ में लिखा है कि उनको मुरादाबाद आर्यसमाज से 'रसाला एक आर्य' नाम की उर्दू पुस्तक प्राप्त हुई थी, जिसमें कलकत्ता की आर्य सन्मार्ग सन्दर्शिनी सभा के प्रश्न एवं आर्यसमाज की ओर से दिए गए उत्तर का विवरण प्रकाशित हुआ था। उन्होंने इस 'रसाला एक आर्य' उर्दू पुस्तक के सम्बन्ध में लिखा है — "पुस्तक में प्रकाशक का तो क्या लेखक का भी नाम कहीं नहीं दे रखा। हमारे पास पूरी पुस्तक है तथापि सम्भव है कि टाईटल पृष्ठ 1 व 2 (जो पुस्तक के साथ नहीं और होना चाहिए था) पर कहीं मुद्रणालय व प्रकाशक का नाम व पता होता। इतना तो निश्चित है कि पुस्तक पर लेखक का नाम नहीं छपा था। यदि छपा होता तो पुराने लेखक बहुत जोर देकर ऐसा कदापि न लिखते कि इसके लेखक ला. साईदास जी थे।" (म. द. का एक अलभ्य शास्त्रार्थ, पृ. 12-13) साईदास उस पुस्तक के लेखक थे ऐसा बहुत जोर देकर किसने लिखा है,

यह राजेन्द्र जिज्ञासु ने नहीं बताया है। उन्होंने इस उर्दू पुस्तक का प्रकाशन वर्ष भी कहीं नहीं लिखा है।

राजेन्द्र जिज्ञासु ने महर्षि दयानन्द का एक अलभ्य शास्त्रार्थ पुस्तक में यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि लाला साईदास इस पुस्तक के लेखक नहीं हो सकते, क्योंकि उनमें ऐसी योग्यता नहीं थी, साईदास अच्छे अनुवादक एवं प्रबन्ध पटु तो थे, परन्तु वे पण्डित नहीं थे, इत्यादि। (म. द. स. का सम्पूर्ण जीवनचरित्र, भाग-2, पृ. 464-465) उन्होंने लिखा है— “लाला साईदास जी जैसा एक प्रबन्ध पटु व्यक्ति इसका लेखक कैसे हो सकता है?... मौलिक और सैद्धान्तिक पुस्तक लिखना उनके बस की बात नहीं थी।” राजेन्द्र जिज्ञासु ने अपनी इस धारणा या अनुमान का आधार एकमात्र युधिष्ठिर मीमांसक की एतद् विषयक धारणा या अनुमान को बनाया है, अन्य कोई ठोस, निर्णायक या यथोचित प्रमाण अपनी धारणा के पक्ष में वे उपस्थित नहीं कर पाए हैं।

राजेन्द्र जिज्ञासु का परस्पर विरोधी मत

फिर भी अपनी पुस्तकों में कुछ स्थानों पर राजेन्द्र जिज्ञासु को भी ‘रसाला एक आर्य’ के लेखक या सम्पादक के रूप में लाला साईदास के नाम का उल्लेख करना पड़ा है। जैसे कि—

1. “हमने अपने लेखों में लिखा था कि यह प्रत्युत्तर उर्दू में ‘रसाला एक आर्य’ के नाम से प्रकाशित हुआ था। इसके लेखक थे लाहौर आर्यसमाज के नेता श्री ला. साईदास जी।” (म. द. का एक अलभ्य शास्त्रार्थ, पृ. 11)

2. “इस पुस्तक में इस अध्याय की समाप्ति पर पाद-टिप्पणी में ‘रसाला एक आर्य’ का लेखक लाला साईदास जी को बताया गया है।” (वही, पृ. 16)

3. “पुस्तक में कहीं भी लेखक ने अपना नाम नहीं दिया। उर्दू के इस सीन अक्षर (स) से लेखक का नाम साईदास अभिप्रेत है।” (पृ. 76, पाद-टिप्पणी तथा म. द. स. का सम्पूर्ण जीवनचरित्र, भाग-2, पृ. 499, पाद-टिप्पणी)

4. “एक अलभ्य शास्त्रार्थ में एक स्थान पर उर्दू में दो अक्षर सीन तथा दाल (स एवं द) मिलते हैं। इनसे साईदास अभिप्रेत है।” (म. द. स. का सम्पूर्ण जीवनचरित्र, भाग-2, पृ. 465)

5. “यह प्रत्युत्तर उर्दू में ‘रसाला एक आर्य’ के नाम से प्रकाशित हुआ था। इसके मुअल्लफ (सम्पादक) थे लाहौर आर्यसमाज के नेता श्री लाला साईदास जी।” (म. द.

स. का सम्पूर्ण जीवनचरित्र, भाग-2, पृ. 461)

6. “आज तक ऋषि जीवन पर लिखने वालों में से तीन जीवनी लेखकों—लाला लाजपतराय जी, मेहता राधाकिशन जी तथा श्रीमान् भवानीलाल जी भारतीय ने अपनी-अपनी पुस्तक में ‘रसाला एक आर्य’ का लेखक लाहौर समाज के लाला साईदास जी को बताया है।” (वही, पृ. 464)

7. महर्षि दयानन्द का एक अलभ्य शास्त्रार्थ के पृ. 85 पर दी गई अपनी पाद-टिप्पणी में राजेन्द्र जिज्ञासु ने स्पष्ट रूप से साईदास को रसाला एक आर्य का लेखक लिखा है, परन्तु इसके पूर्ववर्ती पृष्ठ पर दी गई अपनी पाद-टिप्पणी में स्वामी जी को इसका लेखक सूचित करते हुए लिखते हैं— “धन्य थे ऋषिवर दयानन्द जी महाराज जिन्होंने आर्य सन्मार्ग सन्दर्शिनी सभा के आयोजकों व सभा में भाग लेने वालों के विरुद्ध निन्दापरक एक भी शब्द नहीं कहा।” (पृ. 84) क्या राजेन्द्र जिज्ञासु यह भी बता सकते हैं कि ‘रसाला एक आर्य’ में कितना अंश, कितनी पंक्तियाँ स्वामी जी के द्वारा लिखवाई गई हैं और कितना अंश, कितनी पंक्तियाँ साईदास या अन्य किसी के द्वारा लिखी गई हैं?

उपरोक्त बातों पर विचार करने से प्रतीत होता है कि राजेन्द्र जिज्ञासु स्वयं ही इस विषय में ढिलमिल तथा दुविधाग्रस्त हैं और फलतः अपने इष्ट मत को सिद्ध करने में विफल रहे हैं।

कलकत्ता की सभा पर स्वामी दयानन्द की प्रतिक्रिया

स्वामी कृपाराम ने स्वामी दयानन्द को आर्य सन्मार्ग सन्दर्शिनी सभा के इन प्रश्नों की सूचना देते हुए उनके उत्तर देने की प्रार्थना की थी, परन्तु स्वामी जी ने कृपाराम को पत्र से सूचित कर दिया— “कलकत्ते की सभा आदि के साथ हमको लिखने छपवाने का अवकाश नहीं, वेदभाष्य का काम बहुत है। तुमको अवकाश हो लिखो छपवाओ।” (ऋ. द. स. के पत्र और विज्ञापन, द्वितीय भाग, तृतीय संस्करण, पृष्ठ 493) स्वामी जी ने कृपाराम को यह पत्र 31 मार्च 1881 को जयपुर से लिखा था। स्वामी का शेष जीवन तो मसूदा, रायपुर, बनेड़ा, चित्तौड़गढ़, इन्दौर, मुम्बई, उदयपुर, शाहपुरा, जोधपुर, अजमेर आदि में ही व्यतीत हो गया। अतः स्वामी जी ने ये उत्तर अन्य से लिखवाया था— इस प्रकार की बात करने वालों को यह भी तो सप्रमाण बताना पड़ेगा कि स्वामी से किसने, कहाँ पर और कब सम्पर्क कर उनसे ये उत्तर, और वे भी उर्दू में, लिखवाए। ऐसा एक भी प्रमाण

न तो युधिष्ठिर मीमांसक ने दिया है और न ही राजेन्द्र जिज्ञासु ने।

स्वामी जी के उपर्युक्त पत्र से तो सहज अनुमान यही लगाया जा सकता है वे इन प्रश्नों के प्रत्युत्तर लिखने-छपवाने में समय लगाना ठीक नहीं समझते थे और इसलिए उसमें प्रवृत्त नहीं हुए होंगे। अपने निर्णय पर वे प्रायः दृढ़ रहने वाले व्यक्ति थे। राजेन्द्र जिज्ञासु ने लिखा है— “विद्वान् पण्डित सर्वसम्मत व्यवस्था देकर बड़े गद्गद् हुए होंगे। उन्होंने समझ लिया कि वे जीत गए हैं और दयानन्द पराजित हो गया है, परन्तु ऋषि दयानन्द पर तो इस घटना का किंचित् मात्र भी प्रभाव न पड़ा। उन तक भी इस सभा के सब समाचार पहुँचे या पहुँचाए गए, परन्तु वे इससे घबराए, डगमगाए नहीं। वे सब-कुछ सुनकर भी यथापूर्व अकम्प रहे। वेदवेत्ता ऋषि अथर्व रहा—अडोल रहा।” (दयानन्द ग्रन्थमाला, तृतीय संस्करण, तृतीय भाग में समाविष्ट कलकत्ता-शास्त्रार्थ की भूमिका, पृ. 631) इससे भी उसी अनुमान को बल मिलता है कि स्वामी जी ने कृपाराम को लिखे पत्र में जो लिखा था तदनुसार कलकत्ता की इस सभा के उत्तर में स्वयं कुछ भी नहीं लिखा-लिखवाया होगा। अतः सम्भव है कि स्वामी जी के पत्र के निर्देशानुसार साईदास ने उन प्रश्नों के उत्तर तैयार कर ‘रसाला एक आर्य’ प्रकाशित किया हो। स्वामी दयानन्द के जीवनचरित्रकार डॉ. जे.टी.एफ. जोर्डन्स ने भी कुछ ऐसा ही मत प्रकट करते हुए लिखा है— “It is not likely that the Council carried much weight outside Calcutta. The Swami was well aware of these events... So he left it to his Aryas to give a detailed answer.” (Dayananda Sarasvati - His Life and Ideas, p. 219) अर्थात् सभा की कार्यवाही का प्रभाव कलकत्ता के बाहर कुछ खास उत्पन्न होने वाला नहीं था। स्वामी जी इन घटनाओं के बारे में अच्छी तरह जानते थे... इसलिए विस्तृत उत्तर देने का काम उन्होंने अपने आर्यों पर छोड़ दिया था।

आर्य सन्मार्ग सन्दर्शिनी सभा के प्रश्नों के उत्तर हिन्दी के स्थान पर उर्दू में क्यों?

आर्य सन्मार्ग सन्दर्शिनी सभा में एकत्रित पण्डितों में अधिकतर तो बंगाल, कानपुर, वृन्दावन, नवद्वीप आदि के ही थे। जिन्होंने इस सभा में मुख्य भूमिका निभाई थी वे महेशचन्द्र न्यायरत्न, रामसुब्रह्मण्य शास्त्री (रामसोबा शास्त्री) आदि संस्कृतज्ञ थे। अतः पण्डित लेखराम संगृहीत जीवनचरित्र में लिखा है— “(इस सभा में) संस्कृत और बंगला दोनों भाषाओं में तर्क-वितर्क होता

रहा। प्रश्नों के उत्तर सब लिख लिये गये थे और उन पर सब पण्डितों की सही (हस्ताक्षर) हुई थी।” (पृ. 613, संस्करण 2007 ई.) इससे इतना तो निश्चित है कि कलकत्ता की इस सभा में उन पण्डितों द्वारा उर्दू का व्यवहार तो नहीं किया गया होगा। उस समय इस सभा का विवरण जिन ‘सार-सुधानिधि’ तथा ‘आर्य-दर्पण’ आदि समाचारपत्रों में छपा था, वह भी हिन्दी में ही छपा होगा। ‘रसाला एक आर्य’ में लिखा है कि सभा की कार्यवाही का विवरण इन्हीं ‘सार-सुधानिधि’ तथा ‘आर्य-दर्पण’ पत्रिकाओं में से लिया गया है। (म. द. का एक अलभ्य शास्त्रार्थ, पृ. 22, 34) परन्तु ‘रसाला एक आर्य’ तो उर्दू पुस्तक है। स्वामी जी उर्दू नहीं जानते थे। अतः इतना तो निश्चित है कि अगर स्वामी जी को इस सभा के इन प्रश्नों का ज्ञान हुआ होगा तो वह केवल हिन्दी या संस्कृत भाषा के माध्यम से ही हुआ होगा। अगर इन प्रश्नों के उत्तर स्वामी जी द्वारा अन्य से लिखवाए गए होते तो भी स्वामी जी ने अपने उत्तर तो हिन्दी भाषा में ही बोलकर लिखवाए होंगे, न कि उर्दू में। उस समय तो स्वामी जी को हिन्दी भाषा पर पूर्ण अधिकार हो गया था और वे हिन्दी के प्रबल पक्षधर थे। भ्रमोच्छेदन, अनुभ्रमोच्छेदन, भ्रान्तिनिवारण, गोकर्णानिधि आदि लघुग्रन्थ उन्होंने आर्यभाषा (हिन्दी) में ही प्रकाशित किए थे। अतः कलकत्ता की सभा के इन प्रश्नों के उत्तर उर्दू में छपे इस बात की अनुमति स्वामी जी ने दी हो यह सम्भव नहीं है।

स्वामी जी ने कलकत्ता के पण्डितों की इस सभा में उठाए गए प्रश्नों तथा उसकी सम्पूर्ण कार्यवाही का पूरा-पूरा विवरण पढ़ा था या नहीं, यह भी निश्चित करना हमारे लिए कठिन है। अगर उन्होंने पढ़ा होता और प्रत्युत्तर देना उचित लगता तो वे स्वयं ही लिखकर अपने नाम से हिन्दी में प्रकाशित कर सकते थे। अतः ‘रसाला एक आर्य’ को स्वामी जी द्वारा अन्य से लिखवाई गई पुस्तक मानने वालों को इस प्रश्न का उत्तर देना होगा कि किसी भी स्थिति में स्वामी जी अपने इन उत्तरों का प्रकाशन हिन्दी को छोड़कर उर्दू में करने के पक्ष में कैसे हो सकते थे? वैसे स्वामी जी ने अपने पत्रादि में कहीं भी ‘रसाला एक आर्य’ को अपनी कृति नहीं बताया है और न ही आज पर्यन्त राजेन्द्र जिज्ञासु तथा परोपकारिणी सभा को छोड़कर किसी ने स्वामी जी के प्रसिद्ध शास्त्रार्थों की सूची में ‘रसाला एक आर्य’ का समावेश किया है।

अगर कोई ऐसी कल्पना करें कि स्वामी जी ने प्रथम हिन्दी में उत्तर लिखवाए होंगे, जिन्हें बाद में किसी ने उर्दू में अनूदित

कर प्रकाशित किए होंगे, तो यह एक क्लिष्ट तथा प्रमाण-शून्य कल्पना ही मानी जाएगी, क्योंकि अगर स्वामी जी ने उत्तर लिखवाए होते तो उस समय स्वामी जी ने यह भी तो पूछा होगा कि इन उत्तरों को आप लोग किस भाषा में प्रकाशित करने वाले हैं। स्वामी जी ने तो हिन्दी में ही प्रकाशित करने का आदेश दिया होगा। पुनः 'रसाला एक आर्य' उर्दू में क्यों प्रकाशित हुई? 'रसाला एक आर्य' को स्वामी जी द्वारा अन्य से लिखवाई गई पुस्तक मानने वालों को इसका समाधान भी करना होगा।

पुराने आर्य विद्वानों की दृष्टि में 'रसाला एक आर्य' लाला साईदास की कृति

1. स्वामी श्रद्धानन्द ने अपनी आत्मकथा 'कल्याण मार्ग का पथिक' में लिखा है—(1) "आर्य सन्मार्ग सन्दर्शिनी सभा कलकत्ता का उत्तर अवश्य खत्रीकुलोत्पन्न लाला साईदास जी ने उर्दू में दिया था।" (पृ. 118, सार्वदेशिक सभा का संस्करण) (2) "उस समय तक उन्होंने (साईदास ने) एक उर्दू ट्रेक्ट 'एक आर्य' नाम से लिखा था, जिसमें कलकत्ते के पण्डितों की ऋषि दयानन्द के विरुद्ध दी हुई व्यवस्था की पड़ताल की गई थी।" (वही, पृ. 97)

2. सत्यार्थ प्रकाश का मास्टर दुर्गाप्रसाद कृत अंग्रेज़ी अनुवाद का प्रथम संस्करण 1908 में विरजानन्द प्रेस लाहौर से प्रकाशित हुआ था। इस अनुवाद के आरम्भ में अनुवादक ने स्वामी जी का आत्मकथन तथा स्वलिखित विस्तृत जीवन वृत्तान्त 'Autobiography and Travels of Swami Dayananda Saraswati' शीर्षक से दिया है। उसमें पृष्ठ 51 पर लिखा है— "The vain display of learning on the part of the meeting produced no effect on the movement of the Arya Samaj. The pandit's answers are imprinted with sophistry on the face. His distortion of meaning and insisting more on the authority of modern idolatrous literature of the Brahmins than on that of the Vedas, which form the foundation of the Arya Samaj, were soon detected and ably refuted by our brother, Lala Sain Das, President, Arya Samaj, Lahore, in a pamphlet called the 'Ek Arya', to which the reader is referred, if he is confounded by the fallacious arguments of learned folly." यहाँ दुर्गाप्रसाद ने 'एक आर्य' को लाला साईदास कृत लिखा है

और उनकी योग्यता की प्रशंसा 'ably refuted'— 'योग्यतापूर्वक किया गया खण्डन'— इन शब्दों से की है। इससे भी पूर्व 'सत्य धर्म विचार' (चाँदापुर का मेला) का दुर्गाप्रसाद के द्वारा किया गया अंग्रेज़ी अनुवाद 'Triumph of Truth' का प्रथम संस्करण 1889 में विरजानन्द प्रेस लाहौर से प्रकाशित हुआ था। इसमें भी पृष्ठ 110 पर 'एक आर्य' को लाला साईदास की ही रचना लिखा गया है। ध्यातव्य है कि दुर्गाप्रसाद का कार्यक्षेत्र लाहौर रहा था।

3. स्वामी श्रद्धानन्द तथा मास्टर दुर्गाप्रसाद में से किसी ने भी 'एक आर्य' का उपर्युक्त स्थान पर उल्लेख करते हुए इस बात का कोई संकेत नहीं किया है कि यह पुस्तक साईदास ने स्वयं न लिखकर स्वामी जी द्वारा उनसे लिखवाई गई है। ये दोनों महानुभाव साईदास के समकालीन एवं उनसे सुपरिचित थे। इसलिए ये दोनों साईदास के व्यक्तित्व और सामर्थ्य को हमारी अपेक्षा अच्छी तरह से जानते होंगे। आज से लगभग एक शताब्दी से भी कहीं अधिक वर्ष पूर्व हो गए साईदास के लेखन कौशल, बौद्धिक सम्पदा, स्वाध्याय, सत्संग आदि के सम्बन्ध में क्या हम लोग आज ठीक-ठीक अनुमान लगा पाने को सक्षम हैं? उनके मस्तिष्क में क्या-क्या संगृहीत रहा होगा उसका यथार्थ आकलन क्या हम आज कर सकते हैं?

4. बाबा छज्जूसिंह ने 1903 में प्रकाशित स्वामी जी के प्रसिद्ध अंग्रेज़ी जीवनचरित्र 'The Life and Teachings of Swami Dayananda Saraswati' में पृष्ठ 456 पर दी गई अपनी एक पाद-टिप्पणी में 'एक-आर्य' को लाला साईदास की कृति बताते हुए लिखा है— "For a full account, see Ek-Arya, an ably written Urdu pamphlet by the late Lala Sain Das." इस वाक्य में 'an ably written'— 'दक्षतापूर्वक लिखा गया'— शब्दों से उन्होंने यह भी प्रकट किया है कि साईदास ने यह पुस्तिका योग्यता व निपुणतापूर्वक लिखी है। राजेन्द्र जिज्ञासु ने अपनी भूमिका में बाबा छज्जूसिंह के इसी ग्रन्थ का एक लम्बा उद्धरण तो दिया है, मगर उसी प्रकरण में दी गई लाला साईदास को 'एक आर्य' का लेखक बताने वाली उपर्युक्त पाद-टिप्पणी का उल्लेख उन्होंने नहीं किया।

5. लाला राधाकिशन द्वारा लिखित ऋषि के उर्दू जीवन चरित में पृष्ठ 335-336 पर लिखा गया है— "सभा के आक्षेपों का उत्तर एक 'रसाला एक आर्य' में दिए गए हैं। यह रसाला पंजाब के आर्यसमाजों के प्राण लाला साईदास

जी प्रधान आर्यसमाज लाहौर की लेखनी से लिखित है।" राजेन्द्र जिज्ञासु ने लाला राधाकिशन का यह प्रमाण अपनी पुस्तक में उद्धृत किया है। (म. द. स. का सम्पूर्ण जीवनचरित्र, भाग-2, पृ. 463) ध्यातव्य है कि लाला राधाकिशन ने लाहौर में स्वामी जी का उपदेश श्रवण किया था।

6. स्वामी श्रद्धानन्द, दुर्गाप्रसाद, बाबा छज्जूसिंह तथा लाला राधाकिशन के अतिरिक्त आर्यसमाज के उस प्रारम्भिक काल में अन्य भी कई आर्य विद्वान् पैदा हुए थे, जो उर्दू के ज्ञाता रहे। निश्चित रूप से उन्हीं में से कई ऐसे भी रहे होंगे जिन्होंने 'रसाला एक आर्य' पढ़ी होगी। राजेन्द्र जिज्ञासु ने यह तो लिखा है कि— "पुराने आर्य लेखकों के उर्दू साहित्य में भी इसकी ('रसाला एक आर्य' की) चर्चा कहीं-कहीं है।" (महर्षि दयानन्द का एक अलम्ब्य शास्त्रार्थ, पृ. 12) परन्तु उन्होंने यह नहीं बताया कि उन पुराने आर्य विद्वानों में से किसी ने यह लिखा या कहा है कि यह पुस्तक स्वामी जी द्वारा अन्य से लिखवाई गई थी? चलो, मान लेते हैं कि राजेन्द्र जिज्ञासु को प्राप्त हुए 'रसाला एक आर्य' की प्रति के टाईटल पृष्ठ 1 व 2 साथ नहीं थे, परन्तु पुराने आर्य लेखकों तथा विद्वानों में से तो कई ऐसे रहे होंगे कि जिन्होंने प्रथम दो टाईटल पृष्ठ सहित इस पूरी पुस्तक को देखा एवं पढ़ा होगा, और उनमें से कई विद्वानों ने बिना किसी संशय साईदास को इसका लेखक लिखा है। फिर आपने ऐसा निर्णय कैसे ले लिया कि जिन प्रथम दो टाईटल पृष्ठ को आपने देखा ही नहीं है उनमें कहीं पर भी लेखक का नाम नहीं छपा था? यह कैसा अनुसंधान है?

7. इन्टरनेट पर उपलब्ध 'Selections from the records of the Government of India', में लिखा गया है— "Ek Arya is a controversial pamphlet written by Lala Sain Das, giving replies to objections raised against the Arya Samaj by the Arya Sanmarg Saudarshani Sabha, Calcutta." अर्थात् "एक आर्य" लाला साईदास द्वारा लिखी गई एक विवादास्पद पुस्तिका है, जिसमें कलकत्ता की आर्य सन्मार्ग सन्दर्शिनी सभा द्वारा आर्यसमाज के विरुद्ध उठाई गई आपत्तियों का उत्तर है।" (Selections from the records of the Government of India, Several Provinces of British India, 1884, Oxford University, p. 202)

8. राजेन्द्र जिज्ञासु ने लिखा है— "श्री हरबिलास शारदा ने भी लाला साईदास

द्वारा ही उत्तर देना लिखा है, परन्तु विशेष आग्रह के साथ नहीं।" (म. द. स. का सम्पूर्ण जीवनचरित्र, भाग-2, पृ. 464) परन्तु यहाँ विशेष आग्रह के साथ लिखने की आवश्यकता ही कहाँ थी? हरबिलास शारदा ने तो यहाँ स्पष्ट लिखा है— "These questions, were, however, answered later on behalf of the Arya Samaj by Lala Saindas, President of the Arya Samaj Lahore in a pamphlet entitled 'Ek Arya'. (Life of Dayananda Saraswati, p. 257) अर्थात् "इन प्रश्नों के आर्यसमाज की ओर से उत्तर बाद में आर्यसमाज लाहौर के प्रधान लाला साईदास के द्वारा 'एक आर्य' नामक पुस्तिका के रूप में दिए गए थे।" इसी प्रकार आर्यसमाज के अनेक प्रसिद्ध व्यक्तियों ने 'रसाला एक आर्य' को बिना किसी सन्देह किए साईदास की कृति ही माना है।

9. पण्डित देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय संगृहीत जीवनचरित में केवल इतना लिखा है— "आर्यसमाज की ओर से इन सब प्रश्नों का उत्तर युक्ति और प्रमाण द्वारा दिया गया था जो पण्डित लेखराम कृत जीवन-चरित में सविस्तार छपा है।" (पृ. 544, संस्करण 2050 वि.) ये उत्तर स्वामी जी द्वारा किसी अन्य से लिखवाया जाने की कोई बात देवेन्द्रनाथ संगृहीत जीवनचरित में भी कहीं नहीं लिखी गई है।

10. डॉ. भवानीलाल भारतीय ने नवजागरण के पुरोधा दयानन्द सरस्वती में लिखा है— "परन्तु यह ज्ञात नहीं होता कि आर्यसमाज के मत को प्रस्तुत करने वाला कौन था अथवा यह मत सर्वप्रथम लिखित रूप में कब एवं किस माध्यम से प्रस्तुत किया।" (भाग-2, पृ. 798) परन्तु आगे अपने इसी वाक्य पर दी गई पाद-टिप्पणी में उन्होंने स्पष्ट लिखा है— "आर्यसमाज लाहौर के मन्त्री लाला साईदास ने 'एक आर्य' शीर्षक पुस्तक लिख कर कलकत्ता की इस सभा की कार्यवाही की आलोचना लिखी थी।" (वही, पृ. 807) 1991 में प्रकाशित आर्य लेखक कोश में भी उन्होंने लिखा है— "12 फरवरी (सही दि. 22 जनवरी) 1881 को जब कलकत्ता में पौराणिक पण्डितों ने आर्य सन्मार्ग सन्दर्शिनी सभा के नाम से एक बैठक बुला कर स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों के प्रतिकूल व्यवस्थाएं दीं, तो उसके उत्तर में लाला साईदास ने 'रसाला एक आर्य' पुस्तक उर्दू में लिखी और पौराणिक विद्वानों की धारणाओं का तीव्र प्रतिवाद किया। यह पुस्तक ही लाला साईदास की एक मात्र साहित्यिक कृति कही जा सकती है।" (पृ. 324-325)

‘रसाला एक आर्य’ के अन्तरंग विचारणीय स्थान

स्वयं ‘रसाला एक आर्य’ (महर्षि दयानन्द का अलभ्य शास्त्रार्थ) में कुछ स्थान ऐसे पाए जाते हैं, जिन्हें पढ़कर कोई भी इसे स्वामी दयानन्द द्वारा अन्य से लिखवाई गई कृति नहीं मान सकते। जैसे कि –

1. दूसरे उत्तर में ‘भारतीय इतिहास’ शब्दों का प्रयोग किया गया है। स्वामी जी के साहित्य में इन शब्दों का प्रयोग प्रायः कहीं देखने को नहीं मिलता। वे भारतीय के स्थान पर प्रायः आर्यावर्तीय शब्द का प्रयोग करना पसन्द करते थे।

2. प्रत्युत्तर में आर्य सन्मार्ग सन्दर्शिनी सभा के लिए ‘हमारी विदुषी सभा’, ‘हमारी सत्यान्वेषणी सभा’, ‘हमारी भोली सभा’, ‘हमारी इस प्रतिष्ठित सभा’, ‘हमारी उच्च मस्तिष्क वाली सभा’, ‘हमारी विद्वानों की यह परिषद्’, ‘ऐ मेरी अन्वेषणी सभा’, ‘ऐ मेरी प्यारी सभा’, ‘हमारी मान्य सभा’, ‘हे मेरी महान् सभा’, ‘हमारी प्रिय सभा’ इत्यादि शब्दों का अनेक स्थान पर प्रयोग किया गया है। ऐसा लिखना स्वामी जी की शैली नहीं हो सकती।

3. दूसरे उत्तर में किसी सूफी फारसी कवि का एक पद्य (‘लब पे बन्दो चश्म...’) लिखा गया है। यह स्वामी जी के लेखन का लक्षण नहीं है।

4. पंचम उत्तर के अन्त में ‘सीन’ लिखा गया है। इस पर स्वयं राजेन्द्र जिज्ञासु ने पाद-टिप्पणी देते हुए लिखा है – “पुस्तक में कहीं भी लेखक ने तो अपना नाम नहीं दिया। उर्दू के इस सीन अक्षर (स) से लेखक का नाम साईदास अभिप्रेत है।” (वही, पृ. 76)

5. प्राक्कथन के अन्तिम पैरा में लिखा है – “ऐसी बृहत् सभा की ऐसी कार्यवाही के बारे में विचार-विमर्श करना लाभरहित नहीं है। यही कारण है कि हमें लेखनी उठाने की आवश्यकता अनुभव हुई और इस रसाला (पुस्तक) के लिखने की प्रेरणा हुई। वह कार्यवाही ‘आर्य दर्पण’ पत्रिका से अक्षरशः आगे दी जाती है और उसके पश्चात् उसका उत्तर लिखा जाएगा। क्योंकि इस पुस्तक का लेखक एक आर्य – एक सर्वशक्तिमान् परमेश्वर का मानने वाला है, इसलिए इस पुस्तक का नाम भी ‘एक आर्य’ रखा गया है।” (वही, पृ. 21)

6. पुस्तक में दो स्थान पर तत्कालीन ब्रिटिश शासन की स्तुति करते हुए लिखा है – (1) “इसके अतिरिक्त वर्तमान सरकार का शासनकाल भी तेरे

मरुभूमि में शान्ति व स्वतन्त्रता की नदी प्रवाहित कर दी है।” (वही, पृ. 80) (2) “इसी बात का उदाहरण अंग्रेज सरकार के शुभ शासन में जो भारत के लिए एक बहुत बड़ा वरदान और अप्रत्याशित देन सिद्ध हुआ है, चारों ओर स्वतन्त्रता का लाभ प्राप्त हो रहा है।” (वही, पृ. 56) स्वाधीनता के मन्त्रदृष्टा स्वदेश-भक्त स्वामी जी अपने देश पर शासन करने वाले विदेशी शासन के लिए क्या ऐसी बातें लिख या लिखवा सकते हैं?

7. पुस्तक में “वास्तव में इसका (मूर्तिपूजन का) प्रचलन बौद्धकाल से हुआ है” – ऐसा लिखा गया है। (वही, पृ. 57) ‘बौद्धकाल’ जैसे शब्द का प्रयोग स्वामी जी के ग्रन्थों में प्रायः नहीं पाया जाता है। वे मूर्तिपूजा का जनक जैन मत को मानते व लिखते थे, जैसा कि सत्यार्थ प्रकाश आदि में लिखा है।

8. “कुछ एक ने तो स्वामी जी की निन्दा करना ही अपना ध्येय बना रखा है कि कदाचित् इसी से परलोक सुधर जाय।” (वही, पृ. 37)

9. ‘रसाला एक आर्य’ में एक स्थान पर लिखा गया है – “हे मेरी महान् सभा! तेरी महानता व विद्वत्ता में तो किसी को भी सन्देह नहीं हो सकता, परन्तु मैं इस बात पर दंग हूँ कि तेरी कार्यवाही ऐसी क्यों निकली कि उसके खण्डन करने के लिए एक साधारण व्यक्ति लेखनी उठाने को उद्यत हुआ है।” (वही, पृ. 59) इस वाक्य से यही प्रतीत होता है कि स्वयं को ‘एक साधारण मनुष्य’ लिखने वाले व्यक्ति ने ये उत्तर लिखे हैं, स्वामी जी ने नहीं।

10. ‘रसाला एक आर्य’ में एक स्थान पर लिखा है – “हमको ज्ञात नहीं कि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी इसका (‘स परिन्दमन्वावर्तते...’ – सामवेद के ब्राह्मण के इस वाक्य का) क्या अर्थ करते हैं?” (वही, पृ. 52) इस वाक्य से तो स्पष्ट हो जाता है कि इसके लेखक स्वामी जी नहीं हैं, किन्तु कोई अन्य व्यक्ति है। क्योंकि स्वामी जी तो इस वाक्य का अर्थ तथा यथार्थ स्थिति जानते ही थे, जैसा कि युधिष्ठिर भीमांसक ने लिखा है – “ऋ. द. ने काशी-शास्त्रार्थ में इस प्रकरण का विवेचन किया था।” (ऋ. द. स. के पत्र और विज्ञापन, भाग-2, पृ. 882, पाद-टिप्पणी)

11. पुस्तक में मूर्तिपूजा और मृतक श्राद्ध आदि के खण्डन में श्रीमद् भागवत् के प्रमाण उद्धृत किए गए हैं। स्वामी जी के साहित्य में स्व-पक्ष की सिद्धि में पुराणों के प्रमाण नहीं पाए जाते हैं।

12. पुस्तक में ‘स्वामी जी कहते हैं...’, ‘स्वामी जी ...लिखते हैं...’, ‘स्वामी दयानन्द ... कहते हैं’, ‘स्वामी जी मानते

हैं...’ – ऐसे-ऐसे वाक्य पाए जाते हैं, जिनसे यही सिद्ध होता है कि यह पुस्तक स्वामी जी द्वारा नहीं बल्कि किसी अन्य द्वारा लिखित है।

13. इस पुस्तक में ‘एक सामान्य निष्कर्ष’ प्रकरण में ‘हे वृद्ध भारत माता’, ‘हे भारत माता!...’, ‘...स्वास्थ्य लाभ प्राप्त करके तुम्हें (भारत माता) आशीर्वाद दे’ तथा ‘पुत्रो! रोमी (भारत) माता की सुधि लो’ – इत्यादि शब्दों का प्रयोग हुआ है। इससे सिद्ध होता है कि यह पुस्तक स्वामी जी ने नहीं लिखी-लिखवाई है, बल्कि किसी अन्य द्वारा तैयार की गई है। स्वामी जी ऐसे शब्दों का प्रयोग नहीं करते थे।

14. ‘रसाला एक आर्य’ में उसी ‘भारत माता’ को लक्ष्य कर स्वामी जी की स्तुति करते हुए लिखा गया है – “करुणासागर की करुणा कष्ट के पश्चात् अवश्य बरसती है। बिगाड़ के पश्चात् सुधार भी होता है। शुद्ध – पवित्र पालक प्रभु ने तेरे बुढ़ापे पर – निर्बलता पर दया करके तेरे प्राचीन वैभव व कीर्ति की पुनः स्थापना के लिए तेरी सन्तान में से एक योगी महर्षि जन उत्पन्न कर दिया है और यह तेरा वह सौभाग्यशाली सपूत इस बार के लिए समर्पित है कि यदि आवश्यकता पड़ी तो ब्रह्मलोक से अमृत की गंगा लाने को भी तत्पर है। यद्यपि उसके मार्ग में कई रुकावटें हैं, परन्तु वह नर-नाहर घबराने वाला नहीं।... चकित हूँ कि तेरे बच्चे दयानन्द से क्यों घबराने हैं?... और यदि दयानन्द का कोई दोष है तो बस यह है कि वह उनको (लोगों को) पुनः सनातन वेदोक्त धर्म की ओर लाया है और ला रहा है।” (म. द. का एक अलभ्य शास्त्रार्थ, पृ. 79-80) स्वामी जी स्वयं के लिए ऐसी बातें कभी नहीं लिखते थे और न किसी अन्य से लिखवाते थे। इन वाक्यों से यही सिद्ध होता है कि यह पुस्तक स्वामी जी के किसी वृद्ध एवं सुज्ञ अनुयायी भक्त द्वारा लिखी गई है। ऐसे में इसे स्वामी जी का शास्त्रार्थ कैसे माना जा सकता है?

पण्डित लेखराम संगृहीत जीवनचरित्र में स्रोत का निर्देश नहीं

पण्डित लेखराम द्वारा संगृहीत जीवनचरित्र में सन्दर्शिनी सभा की कार्यवाही विषयक सामग्री तथा समाचार को सार-सुधानिधि, हिन्दू पैट्रियट, भारतमित्र, इण्डियन डेली न्यूज, बिहारशास्त्र, आर्यदर्पण आदि में प्रकाशित होने का उल्लेख तो किया गया है, परन्तु आर्यसमाज की ओर से दिए गए प्रत्युत्तर किस स्रोत से लिए गए हैं इसका कोई भी निर्देश उसमें नहीं पाया जाता है। यह भी उल्लेखनीय है कि पण्डित लेखराम द्वारा संगृहीत जीवनचरित्र में दी गई ‘स्वामी जी की रचनाओं’ की सूची में

भी ‘रसाला एक आर्य’ का उल्लेख नहीं किया गया है।

पण्डित लक्ष्मण आर्योपदेशक का मत

राजेन्द्र जिज्ञासु ने लिखा है – “हमने सन् 1884 के आसपास के ‘आर्य समाचार’ मेरठ के अंकों में इस प्रत्युत्तर की चर्चा पढ़कर इसकी सघन खोज आरम्भ की। श्री पं. लेखराम जी के ग्रन्थों में भी इसका उल्लेख है। पुराने आर्य लेखकों के उर्दू साहित्य में भी इसकी चर्चा कहीं-कहीं है।” (म. द. स. का सम्पूर्ण जीवनचरित्र, भाग 2, पृ. 461) यह तो ठीक है, परन्तु विचारणीय बात तो यह है कि क्या आज पर्यन्त किसी भी पुराने आर्य विद्वान् ने ‘रसाला एक आर्य’ को या आर्य सन्मार्ग सन्दर्शिनी सभा को दिए गए प्रत्युत्तर को स्वामी जी का लेख या कृति सिद्ध करने का अथवा इसे स्वामी जी का शास्त्रार्थ बताने का प्रयास किया है? क्या पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी, पण्डित लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी वेदानन्द, पण्डित गंगाप्रसाद उपाध्याय, प्रो. महेशप्रसाद मौलवी, पण्डित भगवदत्त जैसे किसी भी विद्वान् ने इस पुस्तक की गणना स्वामी जी के शास्त्रार्थ या रचनाओं में कहीं की है? आज ‘रसाला एक आर्य’ का ऐसा कौन-सा प्रमाण हाथ लग गया है कि जिसके बल पर इसे स्वामी जी के द्वारा लिखवाई गई कृति बताई जा रही है और इसे स्वामी जी के शास्त्रार्थ में सम्मिलित कर लिया गया है?

लक्ष्मण आर्योपदेशक लिखित उर्दू जीवनचरित्र मूलतः पण्डित लेखराम संगृहीत उर्दू जीवनचरित्र के आधार पर ही लिखा गया ग्रन्थ है। पण्डित लेखराम संगृहीत जीवनचरित्र में तो आर्य सन्मार्ग सन्दर्शिनी सभा विषयक प्रश्नोत्तर का पर्याप्त विवरण दिया गया है, परन्तु लक्ष्मण आर्योपदेशक ने अपने ग्रन्थ में इस विषय में क्या कुछ लिखा है इसकी कुछ भी जानकारी राजेन्द्र जिज्ञासु द्वारा किए गए इसके हिन्दी अनुवाद ‘महर्षि दयानन्द सरस्वती का सम्पूर्ण जीवनचरित्र’ से प्राप्त नहीं होती है, क्योंकि इसमें इस आर्य सन्मार्ग सन्दर्शिनी सभा विषयक सम्पूर्ण प्रकरण तो राजेन्द्र जिज्ञासु ने अपनी ओर से ही लिखकर दूसरे भाग के पृ. 460 से लेकर 504 तक समाविष्ट किया हुआ है। इसलिए लक्ष्मण आर्योपदेशक का एतद् विषयक अभिप्राय उनके ग्रन्थ के इस हिन्दी अनुवाद से जाना ही नहीं जा सकता है।

अनुभ्रमोच्छेदन ग्रन्थ की स्थिति

स्वामी जी के भ्रमोच्छेदन ग्रन्थ के उत्तर में राजा शिवप्रसाद ने द्वितीय निवेदन नामक पुस्तक प्रकाशित की थी। स्वामी जी ने इसका उत्तर अनुभ्रमोच्छेदन ग्रन्थ के रूप में लिखकर प्रकाशित करवाया था।

परन्तु इसे स्वयं लिख या लिखवाकर भी स्वामी जी ने इसको अपने नाम से प्रसिद्ध नहीं किया था। जैसे यह तथ्य ग्रन्थ की रचना शैली और स्वामी जी के पत्रादि तथा अनुश्रमोच्छेदन के प्रथम संस्करण के अन्तिम पृष्ठ पर वैदिक यन्त्रालय के तत्कालीन प्रबन्धकर्ता लाला सादीराम की ओर से छपे विज्ञापन द्वारा प्रामाणिक है, वैसे ही अगर यह प्रामाणिक सिद्ध होता है कि 'रसाला एक आर्य' भी स्वामी जी का लिखा-लिखवाया गया है, तब तो बात ठीक थी। परन्तु बिना किसी प्रमाण यह स्थापित करने का उद्योग करना कि 'रसाला एक आर्य' स्वामी जी द्वारा रचित है, सर्वथा अनुचित प्रयास माना जाएगा।

'रसाला एक आर्य' की प्राप्ति - एक बहाना

एक दृष्टि से देखा जाए तो 'रसाला एक आर्य' का प्रथम हिन्दी अनुवाद तो पण्डित लेखराम द्वारा संगृहीत उर्दू जीवनचरित्र के 1971 ई. में आर्यसमाज नया बांस दिल्ली से प्रकाशित पण्डित रघुनन्दनसिंह निर्मल द्वारा किए गए हिन्दी अनुवाद के माध्यम से हमें उपलब्ध हो ही गया था। युधिष्ठिर मीमांसक तथा राजेन्द्र जिज्ञासु दोनों पण्डित लेखराम द्वारा संगृहीत इस जीवनचरित्र के हिन्दी अनुवाद के माध्यम से इन उत्तरों से सुपरिचित थे। फिर भी इसके बल पर दोनों में से किसी ने भी सैद्धान्तिक रूप से यह प्रतिपादित करने का निर्णय या साहस नहीं किया कि ये उत्तर स्वामी जी के द्वारा ही लिखवाए गए हैं। युधिष्ठिर मीमांसक ने भी इस बात की केवल सम्भावना या अनुमान ही प्रकट किया था, प्रतिपादन नहीं किया था। परन्तु

उनके देहावसान (24 जून 1994) के पश्चात् राजेन्द्र जिज्ञासु को 'रसाला एक आर्य' पुस्तक प्राप्त हो गई और उन्होंने युधिष्ठिर मीमांसक द्वारा प्रकट की गई उपर्युक्त सम्भावना या अनुमान को बिना किसी प्रमाण के एक ऐतिहासिक सत्य के रूप में प्रतिपादित करने का मन बना लिया और इसे महर्षि दयानन्द का एक अलभ्य शास्त्रार्थ नामक पुस्तक के रूप में प्रकाशित कर दिया। परन्तु वास्तविकता यह है कि 'रसाला एक आर्य' के इस हिन्दी अनुवाद में पण्डित लेखराम द्वारा संगृहीत जीवनचरित्र के हिन्दी अनुवाद में उपलब्ध एतद् विषयक सामग्री से अतिरिक्त ऐसी कोई नवीन निर्णायक जानकारी नहीं है कि जिसकी सहायता से इस निष्कर्ष पर पहुंचा जा सके कि ये उत्तर स्वामी जी द्वारा अन्य से लिखवाए गए हैं। इसलिए 'रसाला एक आर्य' की प्राप्ति तो एक बहाना लगता है - इसे स्वामी जी का शास्त्रार्थ बताने का।

लाला साईदास के अवदान के प्रति अन्याय

जिस व्यक्ति (साईदास) का नाम आरम्भ से लेकर आज पर्यन्त 'रसाला एक आर्य' के लेखक के रूप में चला आया है, और कई पुरानी पुस्तकों में भी ऐसा ही उल्लेख पाया जाता है, उस व्यक्ति की भूमिका को बिना किसी ठोस प्रमाण केवल स्व अनुमान या कल्पना के आधार पर नकारते हुए, उस व्यक्ति में इसे स्वतन्त्र रूप से लिखने की योग्यता नहीं थी, ऐसा प्रकाशित करना क्या उनकी प्रतिष्ठा तथा व्यक्तित्व के प्रति अन्याय नहीं है? क्या यह एक प्रकार से जबरदस्ती नहीं है? हाँ, अगर साईदास ने 'रसाला एक आर्य' में या

अन्यत्र कहीं ऐसा कुछ संकेत किया होता कि यह पुस्तक मैंने स्व-सामर्थ्य से न लिख कर स्वामी जी से या किसी अन्य विद्वान् से लिखवाई है, तो बात अवश्य भिन्न होती; परन्तु ऐसा तो उन्होंने कुछ भी लिखा नहीं है। स्वामी श्रद्धानन्द ने साईदास के सम्बन्ध में लिखा है - "लाला साईदास जी उस समय आर्यसमाज लाहौर के स्वामी समझे जाते थे। लाहौर आर्यसमाज की और उसके साथ पंजाब के सारे आर्यसमाजों की - जिनका जीवन इस समय लाहौर आर्यसमाज पर ही निर्भर था - सारी कला के संचालक लाला साईदास जी ही थे। इस शक्ति तथा अधिकारों को वे ही लोग जानते हैं, जिन्हें लाला साईदास जी से अधिक वास्ता पड़ता था।... इतिहास के वे अवतार थे और विशेषतः ईसाइयों के धार्मिक इतिहास के अतिरिक्त मुसलमानों और सिक्खों के इतिहास से भली प्रकार अभिज्ञ थे।" (कल्याण मार्ग का पथिक, पृ. 97-98, सार्वदेशिक सभा का प्रकाशन) इतना ही नहीं, उनकी मृत्यु पर लाला लाजपतराय ने लिखा था - "हाय ! पण्डित गुरुदत्त के मरने से तो हम बे-उस्ताद हो गए थे मगर लाला साईदास के मरने से हम यतीम हो गए।" (पण्डित गुरुदत्त विद्यार्थी, ले. डॉ. रामप्रकाश, पृ. 15, पाद-टिप्पणी)

चिन्ता की बात

अब इस 'रसाला एक आर्य' को स्वामी जी के शास्त्रार्थ-संग्रह में समाविष्ट कर देने से इस बात की पूरी सम्भावना है कि पाठक उसे भी स्वामी जी के अन्य वास्तविक शास्त्रार्थों के समान प्रामाणिक मानने की भ्रान्ति में पड़ेगा और उसे स्वामी जी के अन्य सत्यार्थ प्रकाश

आदि ग्रन्थस्थ मन्तव्यों के समान ही ग्रहण करेगा। इसलिए उचित एवं न्यायपूर्ण यही है कि जब तक किसी प्रमाण के आधार पर यह सिद्ध नहीं होता कि आर्य सन्मार्ग सन्दर्शिनी सभा के प्रश्नों का जो उत्तर 'रसाला एक आर्य' में दिया गया है वह स्वामी दयानन्द द्वारा अन्य से लिखवाया गया है, तब तक उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर लाला साईदास को ही उसका लेखक या सम्पादक मानना चाहिए। इस पुस्तक में वर्णित बातों को स्वामी दयानन्द के विचार, लेख या शास्त्रार्थ मानकर प्रस्तुत नहीं करना चाहिए। किसी को भी साईदास की बौद्धिक क्षमता तथा उनके लेखन एवं सम्पादन सम्बन्धी सामर्थ्य का स्व-रुचि अनुसार आकलन करने का आग्रह नहीं करना चाहिए। युधिष्ठिर मीमांसक हो या राजेन्द्र जिज्ञासु या अन्य कोई, किसी का व्यक्तिगत अनुमान या धारणा प्रमाण का विकल्प नहीं हो सकती। इसलिए स्वामी दयानन्द जैसे ऋषि के नाम पर किसी अन्य व्यक्ति के विचार या लेख को प्रसारित करने से बचना चाहिए। अगर हम इस प्रकार के साहित्यिक प्रदूषण की रोकथाम नहीं करेंगे तो आगे चलकर कई नई-नई समस्याएँ खड़ी हो सकती हैं। आशा है कि स्वामी दयानन्द की उत्तराधिकारिणी सभा, आर्यसमाज के विद्वान् तथा जागरूक पाठक इस चिन्ता को ठीक से समझ पाएंगे और स्वामी दयानन्द सदृश ऋषि आत्मा के लेखों की पवित्रता को आने वाले युगों के लिए अक्षुण्ण बनाए रखने में पर्याप्त सावधानी रखेंगे।

8-17 टाउनशिप, पो. नर्मदानगर,

जि. भरुच, गुजरात - 392015,

मो. 9879528247

पृष्ठ 02 का शेष

अमृत-पान

वस्तुओं की आवश्यकता नहीं है।

छह मास का मन्त्रित्व

संतान की इच्छा में तड़पता हुआ राजा नहीं जानता कि क्या करे। उसकी गद्दी अब कौन सँभालेगा। उसे इसकी अत्यन्त चिन्ता है। अन्ततः सोचते-सोचते उसने यह उपाय निकाला कि उसका राज्य भी स्थिर रहे और कोई अकेला व्यक्ति उसका स्वामी न बने। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने पाँच मन्त्री नियुक्त किये, जो राज्य सञ्चालन का कार्य किया करें। इन मंत्रियों में से एक प्रधान बनाया गया, परन्तु इसके साथ यह भी शर्त रखी कि एक मन्त्री छह मास से अधिक प्रधान न रहे और जब उसकी अवधि समाप्त हो

जाए तब उसे वनवास दे दिया जाए और नदी के पार जंगल में भेज दिया जाए तथा उसके स्थान पर नया प्रधान बना दिया जाए।

यह नियम लागू हो गया। जो प्रधान बनता वह छह मास के पश्चात् नदी के पार जंगल में भेज दिया जाता, जहाँ वह बेचारा भूख-प्यास से तड़पता हुआ मर जाता। इसी प्रकार पाँच-छह मन्त्री मर गये। एक बुद्धिमान् मन्त्री प्रधान बना। उसने प्रधान बनते ही नदी के पार भवन बनवाने आरम्भ कर दिये। खेती-बाड़ी का काम भी आरम्भ करा दिया। नदी से नहरें निकाल कर दूर जंगल तक ले गया। बगीचे बनवा दिये, फूल और फलों के वृक्ष लगवा दिये। कहने का तात्पर्य यह कि प्रत्येक प्रकार का आवश्यक सामान वहाँ इकट्ठा करवा दिया। जब उसके प्रधानकाल के छह मास पूरे हो गये तब उस मन्त्री को भी नदी के पास पहुँचा दिया

गया, परन्तु वनवासित कर दिये जाने पर भी उसे किसी प्रकार का कष्ट नहीं उठाना पड़ा, प्रत्युत वह उसी आनन्द से रहने लगा जैसेकि अपने प्रधान काल में था। उसे न भूख से तड़पना पड़ा और न प्यास से दुःखी होना पड़ा।

जानते हो, यह कहानी क्या शिक्षा प्रदान करती है। सुनिए।

मानव-शरीर जो आपको दिया गया है, वह छह मास का मन्त्रित्व है। आपको प्राणियों में सर्वश्रेष्ठ बनाया गया और सब पर शासन करने के लिए पैदा किया गया है, परन्तु मूर्ख लोग इस छह मास के मन्त्रित्व को विषय भोगों और इस प्रकार के अन्य व्यर्थ के आमोद-प्रमोद में व्यतीत कर देते हैं। ये परलोक का तनिक भी विचार नहीं करते।

इस मन्त्रित्व को पाकर जो लोग भविष्य का विचार नहीं करते, उन्हें दूसरे

जन्म में जंगल में भूख-प्यास से तड़पना पड़ता है, उन्हें जंगली पशु फाड़ खाते हैं। वहाँ उनका कोई रक्षक नहीं होता। इसी संसार में जो भूखे ओर निर्धन दिखाई देते हैं, जानते हो, वे कौन हैं? वे वही छह मास का मन्त्रित्व करने वाले आमोद और प्रमोद तथा भोग-विलास में मन्त्रित्व को व्यतीत करने वाले मूर्ख लोग हैं, परन्तु जो विचारवान् हैं, समझदार हैं, वे परलोक की सामग्री को साथ-साथ इकट्ठा करते जाते हैं। वनवासित अथवा नदी के पार होकर भी अपने शुभ और पुण्य कर्मों के द्वारा वे वहीं सामान पाते हैं जो मन्त्रित्वकाल में उनके पास था।

इस कहानी को पढ़कर क्या आप अपने छह मास के मन्त्रित्व का उत्तम प्रयोग नहीं करेंगे।

..... क्रमशः

वेदों में पर्यावरण चेतना

● डॉ. आर्यन्दु द्विवेदी

पर्यावरण शब्द 'परि' और 'आवरण' दो शब्दों से मिलकर बना है। 'परि' का अर्थ चारों ओर और 'आवरण' का अर्थ है 'घेरे हुए'। इस प्रकार पर्यावरण का अर्थ यह हुआ कि जो कुछ भी चारों ओर से घेरे हुए है उसको ही पर्यावरण कहते हैं। इस पर्यावरण में प्राकृतिक या भौगोलिक वस्तुएँ जल, वायु, धरती, आकाश, खनिज पदार्थ सम्मिलित हैं जिनसे व्यक्ति घिरा हुआ है। इसके अतिरिक्त सामाजिक वस्तुओं जैसे परिवार, स्कूल, धार्मिक आर्थिक व राजनीतिक संस्थाओं, पड़ोस, आदि से घिरा रहता है उनसे प्रभावित होता है। वर्तमान में पर्यावरण प्रदूषण के निम्न प्रकार हैं—

(1) वायु प्रदूषण— वर्तमान समय में वायुमण्डल प्रदूषित हो चुका है। हमारे देश में औद्योगिकरण, शहरीकरण के कारण वायुमण्डल में विद्यमान हवा की गुणवत्ता में भारी गिरावट आयी है। रेल, मोटर, ट्रक, कोयला, डीजल, पेट्रोल से चलने वाले धुएँ से वातावरण दूषित हो रहा है। इन प्रदूषणों में कार्बन मोनोआक्साइड गैस, हवा में विद्यमान कणवाले पदार्थ, हाइड्रोकार्बन (कार्बन और हाइड्रोजन और ऑक्सीजन के यौगिक) और नाइट्रोजन आक्साइड (नाइट्रोजन और ऑक्सीजन के यौगिक) शामिल हैं। वायु में विद्यमान नाइट्रोजन आक्साइड ओजोन नामक गैस के निर्माण में मदद करती है। ओजोन हाइड्रोकार्बनों के साथ अभिक्रिया करके 'स्मॉग' नाम की धुंध पैदा करती है जिससे वायुमण्डल में प्रदूषण होता है। लगभग प्रतिवर्ष 30 लाख असामयिक मौते वायु प्रदूषण से होती है।

(2) जल प्रदूषण— मानव शरीर का 2/3 भाग जल से निर्मित होता है। प्रदूषित जल के कारण अनेक बीमारियों से ग्रस्त हो जाते हैं। संयुक्त राजसंघ का कहना है कि लगभग 50 प्रतिशत लोगों को स्वच्छ पानी नसीब नहीं है तथा विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार अशुद्ध जल से प्रतिवर्ष 150 करोड़ बच्चों को प्रतिवर्ष डायरिया हो जाता है तथा 40 लाख बच्चे मर जाते हैं।

(3) स्थलीय प्रदूषण— पालिथिन बैग, प्लास्टिक के डिब्बे, कागज, गला, टीन, काँच फेंके जाते हैं जो प्रदूषण फैलाते हैं। घर के कूड़े कचरे से लेकर अन्य कूड़ा कचरा भी प्रदूषण फैला रहा है।

(4) रेडियोधर्मी प्रदूषण— परमाणु बम

विस्फोट परीक्षणों में जो रेडियोधर्मी विष फैलता, उससे वर्तमान मानव ही नहीं भावी पीढ़ियाँ भी प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकती। नाभकीय विस्फोट द्वारा इलेक्ट्रान, प्रोटॉन, न्यूट्रान, अल्फा, बीटा, गामा किरणें प्रभावित होती हैं जिसके कारण कभी-कभी जिन्स तक में परिवर्तन हो जाते हैं और अनुवंशिकता भी प्रभावित होती है।

(5) ध्वनि प्रदूषण— हमारे दैनिक जीवन में तीव्र शोर ध्वनि प्रदूषण हेतु अनेक कारण उत्तरदायी हैं। तेज आवाज में बात करना, चिल्लाना, रेडियो, टी. वी. लाउडस्पीकर, भाषण, मोटर, गाड़ी, हवाईजहाज की आवाज मुख्य हैं।

85 डेसीबल से ऊपर की ध्वनि के प्रभाव से बी.पी. का बढ़ना, थकान, बहरापन, नींद न आना हो सकता है। 120 डेसीबल से अधिक तीव्र ध्वनि गर्भवती महिलाओं को तथा उनके शिशुओं पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।

(6) जैव प्रदूषण— जैव संघटक में वनस्पतियों तथा कुछ जीवों का प्रदूषण वनस्पतियाँ विशेषतः कृषिगत पौधे, फसलें अपनी नैसर्गिक खोते जा रहे हैं। यह रोगग्रस्त होकर धीरे-धीरे समाप्त हो रहे हैं।

(7) इलेक्ट्रानिक प्रदूषण— वैज्ञानिकों ने विद्युत चुम्बकीय तरंगों (टी.वी.), कम्प्यूटरों, वीडियो खेल यंत्रों को इलेक्ट्रानिक प्रदूषण का नाम दिया है। डा. अल्बर्ट का मत है कि यह आँखों पर ही नहीं, आम स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है।

वैदिक साहित्य में पर्यावरण— वैदिक साहित्य में पर्यावरण के सम्बन्ध में विस्तृत सामग्री प्राप्त होती है। अथर्ववेद में यह मंत्र आया है—

त्रीणि छन्दासि कवयो वि येतिरे,
पुरुषं दर्शतं विश्वचक्षुषम्।
आपो वाता ओषधय्—
तान्येकस्मिन्भुवन अर्पितानि॥

अथर्ववेद-18.1.17

अर्थात्, जल, वायु और औषधियाँ (वनस्पतियाँ) यह संसार के प्रकाशक तत्व हैं अर्थात् यह समझ संसार को प्रभावित करते हैं और इसके बिना जीवन असम्भव है।

प्रकृति ने वनस्पति की पोषकवर्धक वायु ही है— अग्रं पिबा मधूनां सुतं

वायो दिविप्तिषु। त्वं हि पूर्वपा असि॥
ऋग्वेद 4.46.1

हे वायु वनस्पति का सोमपान कर पर्यावरण में सन्तुलन कायम कर।

वातः पर्जन्य आदिग्निस्ते
क्रव्यादमशीशयन्।

अथर्व. 3.21.10

अर्थात्, पर्वत, जल, वायु, वर्षा और अग्नि ये प्रदूषण को दूर करके पर्यावरण को शुद्ध करते हैं।

मनुष्य एवं पशुओं के मल-मूत्र एवं औद्योगिक कारखानों से वातावरण दूषित होता है जिसे दूर करने के लिए प्रत्येक गृहस्थ को यज्ञ करना चाहिए। यज्ञ की सुगन्ध से प्रचुर मात्रा में ऐसी गैसें निकलती हैं जो उस कमी को पूरा करती हैं। यज्ञ में प्रधान द्रव्य घृत है। घृत बल एवं तेज देने वाला है, रोग प्रतिरोधक है तथा शोधक शक्ति उत्पन्न करता है।

को अस्मिन् प्राणमवयत्को अपनो
व्यानम्।

समानस्मिनको देवोऽधिशिश्नाय पुरुषे॥

इस शरीर में किस देव ने प्राण, अपान व्यान और समान उदान वायु कुल दिया है। अर्थात् वायु शरीर में जाकर विभिन्न रूपों में बँटकर विविध प्रयोजन का अन्जान देकर शरीर को ढाँचे को बनाए रखती है।

वायु स्वास्थ्य को प्रदान करने वाली और रोगों को समाप्त करने वाली है—

द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा
परावतः

दक्षं ते अन्य आवातु परान्यो वातु
यद्रयः।

ऋग्वेद 10.137.1

अर्थात् दो प्रकार के वायु चलते हैं। एक अन्तरिक्ष और दूसरा समुद्र से आता है। प्रथम शरीर को पवित्र करता है तथा दूसरा शल के मलादि के कारण जो अशुद्ध है उसको शुद्ध करता है। प्रथम को देवदूत कहते हैं क्योंकि उसे प्रभु ने रोग शमन हेतु बनाया है—

“ते यक्ष्यं परा सुवामि”

ऋग्वेद 10/137/5

(तेरा यक्ष्मा रोग दूर करता हूँ)

वायु में हाथ स्पर्श मात्र से यह रोग दूर करने की सम्भावना दर्शाई गई है।

जल प्रदूषण पर भी वेदों में अनेक

मंत्र देखने को मिलते हैं। वेदों में जल के महत्व, जल के औषधि गुण तथा जल को प्रदूषित न करने पर बल दिया गया है।

“यस्यामापः परिचराः समानी रहो रात्रे,
अप्रमादं चरन्तिः” अथर्ववेद

12/1/19

पृथ्वी पर जल गतिशील “समानी” रूप धरातल बनाते हुए दिन रात बहते रहते हैं)

वेदों में जल के सेवन का महत्व बताते हुए कल्याण करने वाली औषधि भी बताया गया है—

“देवस्य सवितुः सर्व कर्म कृण्वन्तु
मानुषाः।

शानो भवन्त्वप ओषधीः शिवाः।”

अर्थात् सूर्य देवता की प्रेरणा में रहकर मनुष्य कर्म करे तो जल औषधि बनकर हमारे लिए कल्याणकारी होता है।

इसके अतिरिक्त पर्यावरण की रक्षा हेतु वृक्षों को लगाने पर वेदों में बल दिया गया है।

“वनस्पति वन आस्थापयह वं
नि पू दाधिष्ठाम् अखनन्त उत्सम्।

ऋग्वेद 10.101.11

हजारों वर्षों पूर्व वेदों में दिए गए विवरण आज भी प्रासंगिक हैं। वर्तमान समय से सबसे चिन्तनीय बात यह है कि मानव ने भूमि, जल, वन, पर्वत, नदी एवं अन्य प्राकृतिक शक्तियों का अंधाधुंध दोहन किया है जिससे पर्यावरण पर विपरीत प्रभाव पड़ा है। अतः पर्यावरण की सुरक्षा हेतु राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रभावकारी के प्रति जन चेतना जगानी होगी। यदि पर्यावरण में सुधार की ओर ध्यान न दिया गया तो कोई भी शक्ति सृष्टि को विनाश से नहीं बचा सकेगी।

अतः सभी नागरिकों का कर्तव्य है कि वह इससे उत्पन्न भयावह दुष्परिणामों को समझें व इसके निराकरण हेतु अपने दायित्वों को पूरा करके यह सकल्प लें।

राजकीय महाविद्यालय

कैम्पियरगंज-273158

गोरखपुर उ.प्र

मो. 09415592187

भक्ति मार्ग के अवरोधक

● अशोक जौहरी

भक्ति मार्ग पर चर्चा करना लिखना सरल है परन्तु उस मार्ग पर चलना अत्यन्त कठिन कार्य है। जब पूर्व जन्म के अशुभ कार्य व संस्कार समाप्त प्रायः होते हैं। तब पुण्य का उदय होता है। तब मनुष्यों की सत्संग स्वाध्याय जप आदि की ओर अग्रसित होता है। उसी प्रवृत्ति भी सन्मार्ग पर चलने को प्रेरित करती है। ईश्वर मनुष्यों के इस मार्ग पर चलने में सहायता करते हैं। लाखों साधकों में कोई विरला ही इस मार्ग में सफल होता है।

कठोपनिषद् के अनुसार—“क्षुरस्य धारा निशिता दुरत्यया दुर्ग पथस्ततः कवयो वदन्ति॥”

भगवत गीतानुसार— मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यत्रति सिद्ध्यते।

उपरोक्त मंत्र में साधना व भक्ति मार्ग को एक लम्बी पैनी धार पर चलने के समान बताया है। हमारी इन्द्रियाँ एक दुर्ग की भाँति हैं, जिसमें साधक उसमें फँसकर रह जाता है। विरले ही मनुष्य इस दुर्ग रूपी इन्द्रियों को विजय कर इस मार्ग पर चलने में सफल होते हैं। दृढ़निश्चयी एकान्त चित्त व स्थिर बुद्धि वाले मनुष्य ही इस पर सफल होते हैं। इसी बात को महाभारत में भीष्म पितामह युद्धिष्ठिर को उपदेश देते हुए कहते हैं। किसी एक दुर्गम जंगल की कल्पना करो जहाँ विषैले जीव जन्तु हो तथा हर समय विष वमन को तत्पर हो। मार्ग अत्यन्त दुर्गम हो घने जंगल ऊँचे-ऊँचे पर्वत उफनती हुई नदी हो, भयानक दावानल हों पेड़ व हरियाली भस्म हो गई हो। भोजन को कोई व्यवस्था न हो। ऐसे जंगल को पार कोई विरला साहसी, दृढ़निश्चयी ही कर सकता है।

इसका अर्थ यह नहीं कि इस मार्ग पर चलने का प्रयास ही ना किया जाए। मेरा उद्देश्य आपको निरुत्साहित करने का नहीं है।

प्रस्तुत लेख में हम इसमें आने वाली समस्त विघ्न बाधाओं पर विस्तृत चर्चा करेंगे। इसमें समझना चाहिये कि भक्ति मार्ग पर चलने पर बुद्धि व मन हमारी इन्द्रियाँ पर अवरोधक हैं। अशुद्ध चित्त वाले व्यक्तियों के लिये साधना में स्थित चित्त रहना कठिन है।

चित्त स्थिर करने के लिये शिव संकल्पमस्तु का यह मंत्र सहायक होगा।

यज्जाग्रतो दूदमुदैति दैवं तदु सुप्तस्य तथैवेति।

दूरंगम् ज्योतिषाम् ज्योतिरेकम् तन्मे मनः शिवसंकल्पसमस्त॥

अर्थात् जिस प्रकार जागृत

अवस्था व सुप्त अवस्था में इन्द्रियों के कारण हमारा चित्त स्थिर नहीं रहता। हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हमारा मन सुन्दर संकल्पों वाला होवे तथा हमारी सहायता करें।

साधना मार्ग पर विघ्न

योग सूत्र में पाँच क्लेशों, नौ चित्त विक्षेपों तथा उससे पाँच विघ्नों व कुछ अन्य अवरोधकों का उल्लेख किया है।

पाँच क्लेश—

(1) अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अमिनिवेश ये पाँच तत्त्व चित्त को उद्वेलित करते हैं। अविद्या का अर्थ व्यास भाष्य के अनुसार स्थूल शरीर को स्थायी समझना, जादू टोना भूत प्रेत पर विश्वास करना, श्रम से कमाये अल्प धन पर संतोष न होना, दुख प्राय समझना बेईमानी से कमाई दौलत से सुख सुविधा के साधन जुटाना व उससे सुखी होना ही अविद्या है। किसी भी सांसारिक जगत से सुखी होना, ढोंगी बाबाओं पर विश्वास करना, यर्थात् को न समझना ही अविद्या है।

(2) अस्मिता—चैतन्य आत्मा व प्रकृति की जड़ बुद्धि से उत्पन्न दृश्य दोनों मोहवश, एक ही समझना अस्मिता है। अर्थात् मैं आत्मा व बुद्धि भिन्न-भिन्न तत्त्व हैं।

(3) राग—एक बार भोगे हुए सुख को पुनः प्राप्त करने की इच्छा रखना भक्ति के मार्ग में राग की उत्पत्ति साधारण बात है।

(4) द्वेष—किसी प्राणी के द्वारा किसी भी प्रकार दुख देने की आपकी आत्मा को दुखाने पर उत्पन्न प्रतिशोध की भावना व उस व्यक्ति से घृणा करना राग है।

(5) अमिनिवेश—जन्मजमान्तर से भोगे दुख व मृत्यु से भय ही अमिनिवेश है।

उपरोक्त क्लेशों के कारण चित्त

में एकाग्रता नहीं आती।

नौ चित्त विक्षेप

भक्ति मार्ग पर थोड़ी सी सफलता मिलने पर ये विक्षेप रूकावट डालते हैं—

पतंजलि के अनुसार—

व्याधि स्त्यान, संशय प्रमादालक्ष्यविरति

भ्रांति दर्शनालभ्य भूमिकत्वान विस्थितत्वानी, चित्त विक्षेपास्ते

अन्तरायः (योग सूत्र 30))

स्थानाभव के कारण उपरोक्त विक्षेपों को संक्षेप में वर्णन करूँगा।

(1) व्याधि—शरीर में किसी व्याधि के कारण

(2) स्त्यान—कार्यक्षमता का अभाव भी चुराना ध्यान में इच्छा की कमी आदि

(3) संशय—भक्ति की विधि को लेकर शंका करना। यह बहुत बड़ी बाधक है।

साधकों को चाहिए संशय रहित होकर इस मार्ग के लिए कोई भी विधि चुन सकते हैं। ईश्वर को सभी विधि स्वीकार है।

(4) भक्ति के प्रति उत्साहित न होना व उससे विरति प्रमाद है।

(5) आलस्य—शरीर में कफ बढ़ने से शरीर में भारीपन व तमोगुण की उत्पत्ति से जी न लगाना या नियमपूर्वक न करना।

(6) इसके अतिरिक्त काम, क्रोध, मद लोभ बाधक है। इनमें साधना के समय काम वासना सबसे बड़ी बाधक मानता है। मैं निःसंकोच इस दुर्गुण को सबसे बड़ा बाधक मानता हूँ। महाभारत में योग को अमृत योग बताया है। भोग-विष के समान है।

इसके अतिरिक्त देवता भी साधक ही परीक्षा हेतु उसकी जरा सी भी उपलब्धि पर विघ्न डालते हैं।

पतंजलि उपदेश देते हुए कहते हैं—

“स्थान्युप निमन्त्रणेः सङ्गसमयाकरणं पुनरिष्ट पैसङ्गात्। योग सूत्र (3.5)”

अर्थात् देवता ऐसे साधकों को स्वर्ग में आने का निमन्त्रण देते हुए कहते हैं आओ योगेश्वर स्वर्ग मैं सुख भोग करो तथा सुखी रहो।

उनका आश्रय सिर्फ उसी परीक्षा लेना ही होता है। इसी कसौटी से साधक परखा जाता है।

अतः साधकों से विनम्र निवेदन है कि इनके झूठे निमन्त्रण पर ध्यान न देकर अति सजगता से सम रहें तथा इस पथ पर अनवरत बढ़ते जावे। किसी आकर्षण व लोभ में न फँसे एक और आवश्यक बात थोड़ी सिद्धि मिलने पर किसी को भी श्राप व वरदान देने की कुचेष्टा न करें। नहीं तो आपका तप भंग हो जायेगा। इसमें आपको स्पष्ट करूँ उपरोक्त विक्षेप योग साधकों भी विचलित करते हैं।

मेरा निजी अनुभव है कि जब मैं ध्यान की स्थिति में बैठता हूँ तो उपरोक्त विकार मेरे समक्ष उमर आते हैं। जिससे मुझे अवरोध उत्पन्न होता है परन्तु मैं निराश कदापि नहीं हूँ। भक्ति के प्रति आशावान हूँ तथा ईश्वर इन अवरोधकों के निवारण हेतु ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ। कभी न कभी मुझे तेरी मंजिल मिल जावेगी।

आशा है इस श्रेष्ठ मार्ग पर चलने वाले साधन इन सब बातों का ध्यान रखे तथा ईश्वर में मन लगाकर श्रद्धापूर्वक इस मार्ग पर सहर्ष चले और लाभान्वित हों। ईश्वर आपकी कामना पूर्ण करें।

“ओ३म स्वस्ति। ओ३म स्वस्ति। ओ३म स्वस्ति।

सभार वेद सहिता

इन्दिरापुरम

मो. 9899349683

गुरुकुल हरिपुर, जुनानी के कुलपति दिवङ्गत

गुरुकुल हरिपुर, जुनानी ओड़िशा के कुलपति, सेवावीर, दानवीर महात्मा वानप्रस्थ सत्यनारायण आर्य कोलकाता, सुजानगढ़ पिछले तीन साल से अस्वस्थ चल रहे थे, उनका देहावसान 92 वर्ष की आयु में 6 अक्टूबर 2017 को सायंकाल 6 बजे रायपुर में हो गया, वे पिछले 35 वर्षों से उन्होंने अपना सारा समय समाज सेवा व जन कल्याण के लिये अर्पित किया था। प्रत्येक क्षण उनका यही विचार रहता था कि मैं किस प्रकार किसी अनाथ, विधवा, गरीब, असहाय दिव्यांगों की सेवा कर सकूँ। ओड़िशा, झारखण्ड, छ.ग., राज., आसाम, आन्ध्रप्रदेश, म.प्र. आदि प्रदेशों में स्थित अनेक धार्मिक शिक्षण संस्थानों को वे अपने दान से सिंचित, पुष्पित व पल्लवित किये हैं, उनमें से गुरुकुल हरिपुर अग्रगण्य है।

इतनी बड़ी उम्र में भी गुरुकुल हरिपुर के सम्माननीय आचार्यों के साथ झारखण्ड, आन्ध्र प्र. आदि प्रान्तों में अनार्थों विकलांगों को अन्न-वस्त्र वितरण हेतु गाड़ी में तीन-चार सौ कि.मी. की यात्रा कर लिया करते थे और कहा करते थे— नर सेवा ही नारायण सेवा है, इन गरीबों की सेवा करने में मुझे आनन्द आता है।

जीते हुए तो अपना सब कुछ दान में दिये ही मृत्यु उपरान्त मृतशरीर भी किसी के काम में आ जाये, इसके लिये उनके द्वारा मृतशरीर को चिकित्सालय में प्रदान करने की लिखित घोषणा की गई थी, तदनुसार छ.ग. में स्थित भिलाई हास्पीटल में उनका शरीर दिया गया। ऐसे बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी, अनेक संस्थाओं के सहयोगी, दानी, परोपकारी व्यक्तित्व के चले जाने पर समाज को अपूरणीय क्षति हुई है, विशेषकर गुरुकुल हरिपुर उनका अभाव कई दिनों तक झेलता रहेगा। गुरुकुल के ब्रह्मचारी एवं सम्माननीय आचार्यों के द्वारा उनकी आत्मा की शान्ति के लिये गुरुकुल में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा की गई, गुरुकुल के संचालक डॉ. सुदर्शन कुलपति जी के द्वारा गुरुकुल हित में किये गये कार्यों का वर्णन कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।



पत्र/कविता

बांग्लादेश की सीमा पर स्थित ईसाई बहुल प्रान्त मेघालय की राजधानी से पत्र

सभा आर्यप्रवर, सादर नमस्ते।

ईश्वर कृपयात्र कुशल तत्रास्तु। 17 सितम्बर को नई दिल्ली से मात्र ढाई घंटे की यात्रा कर एयर एशिया के वायुयान से हम गोहाटी रात 9 बजे पहुँचे। प्रातः दैनिक कर्तव्यों से निवृत्त हो शिलांग रवाना हो गए।

बांग्लादेश व आसाम की सीमा को स्पर्श करता हुआ मात्र 22429 वर्ग कि.मी. क्षेत्रफल का अत्यन्त सुंदर प्रान्त मेघालय है। दिल्ली से इसकी राजधानी की दूरी 2100 कि.मी. है। पूर्व में ये आसाम का हिस्सा था जनजातीय व मजहब विभिन्नता के चलते 21 जनवरी 1972 को इसे पृथक किया गया। जैसा कि इसके नाम से विदित होता है वार्षिक वर्षा यहाँ 1200 से.मी. तक होती है। सर्वाधिक वर्षा होने का एक वर्ष का विश्व कीर्तिमान इसके चेरापूँजी नगर को प्राप्त है। पूरे राज्य की जनसंख्या 22 लाख हैं जिनमें 85% आदिवासी है जो प्रायः धर्मान्तरित हो ईसाई हो गए है। 3 लाख हिन्दू व 1 लाख मुस्लिम हैं। आर्य समाज की स्थापना 1935 में कुछ पंजाबी महानुभावों ने की थी। मुख्य बाजार में आर्य समाज मंदिर व अन्यत्र दो अंग्रेजी माध्यम के स्कूल आर्य द्वारा संचालित है। रविवार व कुछ पर्वों पर सत्संग होता है। वैदिक धर्म से जुड़े लोगों की संख्या बहुत ही कम है। अपने पंचदिवसीय स्वरूप प्रवास में दोनों स्कूलों में व्याख्यान के अतिरिक्त हमने

लक्ष्मी गाथा

कुछ लक्ष्मी हो पास में, पर्व दीवाली मनता
कुछ लक्ष्मी की आस में, पर्व दीवाली मनता।
आसपास लक्ष्मी को कुछ पास पास करके
फिर हर्ष उल्लास में, पर्व दीवाली मनता।।

इस चंचला लक्ष्मी के, अनगिनत फरियादी हैं
कुछ भोले भाले तो कुछ शातिर अपराधी हैं।
लक्ष्मी हो तो होते कितने ही वारे न्यारे
बिन लक्ष्मी के भैया मिलती रोटी आधी है।।

लक्ष्मी की कृपा से, तस्कर समाजसेवी है
चोर-डाकू उपदेशक अर गणिका कुलदेवी है।
भाग्य बदलने वाली इस लक्ष्मी के चलते
घर बैठे ही मिलती राजस्व चुंगी लेनी है।।

लक्ष्मी हो मेहरबान, बिन बादल भी रिमझिम है
जिधर भी खोल दे जुबाँ, उधर खुलजा सिमसिम है।
तन जाए गर भृकुटी, वक्त ठहर-सा जाए
उजियारा भी डर कर, करने लगता टिमटिम है।।

लक्ष्मी खातिर घपले और घोटाले चलते
लक्ष्मी खातिर चाकू-छुरे भाले चलते।
लक्ष्मी खातिर गार्ड तिजोरी ताले चलते
लक्ष्मी खातिर उद्योग धंधे काले चलते।।

लक्ष्मी है पास में तो शिमला और मसूरी है
चेले चमचे चाकर हैं, सर्वत्र जी हुजुरी है।
लक्ष्मी पर टिकी हुई इस दुनिया की धुरी है
फिर कभी और लिखेंगे, कविता अभी अधूरी है।।

—दिलचस्प

सेक्टर-1, ई-191

ज.ना. व्यास कालोनी

वीकानेर, राजस्थान-334003

मो. 9413052122

आर्यों संस्थाओं में संलग्न प्राचार्यों, प्रचारको, आर्यजनों को सिद्धांत पक्ष की प्रतिवद्धता संबंधी मार्मिक आग्रह किया। आर्य समाज के उच्च अधिकारियों को वृहत्स्तरीय प्रचार हेतु सुझाव दिया तथा व्यवसायिक अर्धशुचिता के संबंध में महत्वपूर्ण गंभीर आग्रह किया। सार्वदेशिक सभा से जुड़े रहने की प्रेरणा दी। वायु सेना में कार्यरत देशभक्त रणबांकुरों व उनके श्रद्धालु परिजनों को वैदिक तत्त्वज्ञान संबंधी अनेकानेक प्रेरक उपदेश दिए। खासी, गारो, जयन्तियाँ अत्रव्य आदिवासियों की मुख्य जाति है। महिलाओं से इनके वंश का पता चलता है। राज्य की भाषा अंग्रेजी है। कुल सात जिले हैं। अनेकत्र उल्फा उग्रवादियों का प्रभाव है। इन आदिवासियों के अतिरिक्त बाहरी व्यक्ति को जमीन जायदाद खरीदने की अनुमति नहीं है। पूरे प्रदेश में पहाड़ी घाटियों व 16 नदियों का जाल बिछा हुआ है। वर्ष

में अधिकतर आर्द्रता बनी रहती है। 20 दिसम्बर से 12 फरवरी तक शीतकालीन अवकाश रहने से फरवरी से दिसंबर तक शिक्षण सत्र रहता है। देश विदेश के लाखों पर्यटक वर्ष भर आते रहते हैं। सुपारी बहुत बड़े पैमाने पर पैदा होकर दुनिया भर में बिकने जाती है। दर्शनीय स्थानों में ग्येन नदी पर स्थित बांग्लादेश की सीमा, एयरफोर्स के म्यूजियम सहित कई संग्रहालय, त्रिस्तरीय जल प्रपात, Elephanta Waterfall, वायु सेना परिसर की सबसे ऊँची चोटी जहाँ से पूरा शिलांग दिखता है (Shillong View Point) वर्ष 1840 के वृक्ष की जड़ से नदी पर निर्मित 30 मीटर का पुल Living root, bridge, एशिया का सर्वाधिक स्वच्छ ग्राम Mawshun अनेक चर्च सस्ते दर पर हेलीकॉप्टर यात्रा, अनेक झरने, पार्क आदि प्रमुख हैं। पत्र का शेष भाग गोहाटी आर्य समाज मंदिर से लिखेंगे।

गुवाहाटी के राजभवन जाकर आसाम व मेघालय दो राज्यों के महामहिम राज्यपाल श्रीयुत बनवारी लाल पुरोहित जी से 23 सितंबर 2017 को प्रातः 10.45 पर आर्य समाज के एक शिष्टमंडल के साथ जाकर भेंट की। आपको असमिया व हिन्दी भाषा का वैदिक साहित्य, स.प्र. व कैलेंडर आदि भेंट किया। आप नागपुर से तीन बार सांसद, महाराष्ट्र के कैबिनेट मंत्री व जनसंघ के वरिष्ठ नेता रहे हैं। वैदिक सिद्धांतों के साथ हमने सत्यार्थ प्रकाश की विषय वस्तु के बारे में आपको बताया। आसाम की पाठ्यपुस्तकों से वेदोपदेश सम्मिलित करने का निवेदन किया। गुरुकुल होशंगाबाद व अजमेर के साथ आर्य समाज आते रहने का आग्रह किया। आपने सभी बातों के सकारात्मक उत्तर दिए। रानी बाग दिल्ली की प्रख्यात समाज सेविका स्वर्गीया माता प्रेमलता शास्त्री जी के आग्रह पर कुछ वर्षों पूर्व हम उत्तर पूर्व के इस क्षेत्र में आए थे व नागालैंड, मणिपुर, अरुणाचल प्रदेश आदि में प्रचार कर गए थे। ये सात प्रदेश बहनों के रूप में जाने जाते हैं। देश के कर्णधारों ने बँटवारे के समय असावधानी से नेपाल, बांग्लादेश व भूटान के बीच भारत के लिए इतना कम स्थान रखा है कि उसे मुर्गे की गर्दन Neck of hen कहते हैं। भविष्य में इन राज्यों को भारत से पृथक् करने के षडयन्त्रों से समस्या आ सकती है। प्रभु करे ऐसा कभी न हो। इन सभी प्रदेशों की सरकारों, केन्द्र सरकार व हम सभी को सावधान रहना होगा। आर्यसमाज मंदिर में 24 सितम्बर को प्रातः सायं दोनों समय व्याख्यान के अतिरिक्त अनेक आर्य परिवारों में उपदेश का कार्यक्रम रखा गया। 25 सितम्बर, 2017 सोमवार को प्रातः एयर एशिया के वायुयान से दिल्ली रवाना होंगे। उपरांत उज्जैन व करनाल (हरियाण 11) के आर्यसमाजों में पूर्व निर्धारित सत्संग होना है अतः इच्छा होते हुए भी यहाँ रुकना मुश्किल प्रतीत हुआ। पुनरपि कुछ आर्य प्रचारकों को यहाँ आकर कुछ समय लगाना चाहिए।

आसामों में मत दूँढो अपने सपनों को, सपनों के लिए जमीं भी जरूरी है। कब तक झूठे अहम् से बंधे रहेंगे हम मित्रजन, भक्ति के लिए मन की भूमि में नमी भी जरूरी है।। गृह मंदिर में सभी को नमन कहे।

आचार्य आनन्द पुरुषार्थी

पूर्वी वायु सेना मुख्यालय

शिलांग (मेघालय)

23/9/2017 गुरुवार

पृष्ठ 01 का शेष

म्यांमार में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन...

आर्थिक सहयोग की घोषणा भी होने लगी। तभी स्वामी धर्मानन्द ने कहा शिक्षण व्यवस्था हेतु आचार्य, शास्त्री वे उपलब्ध करवा देंगे।

नशाबन्दी निषेध प्रस्ताव— कार्यक्रम में भारत से पहुंचे कार्यकर्ताओं ने विशेष सहयोग दिया, जिसमें श्री बृजेश आर्य, एस.पी. सिंह, नरेश पाल आर्य, विजेन्द्र

आर्य, सुभाष कोहली प्रमुख थे।

म्यांमार निवासियों के अथक परिश्रम से उसे यादगार बना दिया। जितनी संभावना थी उससे कई गुना ज्यादा परिणाम संगठन हित में प्राप्त हुआ। निश्चित रूप से यह कार्यक्रम केवल संख्या की दृष्टि से नहीं, सार्थकता की दृष्टि सफल रहा।

डॉ. सुखदेव चन्द सोनी परिवार ने

अपने स्वसुर स्व. डॉ. ओमप्रकाश जी की स्मृति में स्थापित की 5000 डॉलर की प्रचार निधि।

महाशय धर्मपाल ने भेजे सन्देश में कहा— न आने का दुःख किन्तु सम्मेलन की सफलता के साथ-साथ वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए करुंगा हर संभव सहयोग। म्यांमार में कन्या गुरुकुल आरंभ

करने के लिए दिया भरपूर सहयोग करने का आश्वासन।

सभा मंत्री श्री विनय आर्य ने इस महासम्मेलन की संकल्पना और आर्यजन में अविस्मरणीय भूमिका निभायी। कुल मिलाकर इस महासम्मेलन से म्यांमार में पिछले 20-30 वर्षों से शिथिलता तो दूर हुई ही साथ ही इस देश में वैदिक प्रचार-प्रसार के नये आयाम मिले हैं।



डी.ए.वी.सी.सै. स्कूल, हाथी गेट द्वारा आर्य समाज में हवन-यज्ञ

आर्य संस्कृति को जन-मानस में आत्मसात करवाने तथा आर्य समाज के प्रसार हेतु डी.ए.वी.सी.सै. स्कूल, हाथी गेट द्वारा आर्य समाज, लोहगढ़ में साप्ताहिक हवन यज्ञ का आयोजन किया गया।

प्रिंसिपल जे.पी. शूर प्रधान, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पंजाब, निदेशक पी.एस.-1 एवं एडिड स्कूल्स इस यज्ञ में मुख्य यजमान एवं सम्माननीय अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। यज्ञशाला में पावन वेद मन्त्रोच्चारण के पश्चात् आहूतियाँ समर्पित कर सम्पूर्ण विश्व की प्रगति व खुशहाली के लिए प्रार्थना की गई। स्कूल के अध्यक्ष एडवोकेट सुदर्शन कपूर ने भी अपनी विशिष्ट उपस्थिति दर्ज करवाते हुए ईश्वर का आशीर्वाद लिया।

प्रिंसिपल जे.पी. शूर ने इस पावन अवसर पर अपने सम्बोधन में कहा कि श्री



पूज्य सूरि जी के आह्वान एवं दिशानिर्देश अनुसार डी.ए.वी. शिक्षण संस्थाओं के संगठित प्रयासों से आर्य समाज के एक नए युग का सूर्योदय हुआ है। उन्होंने कहा कि आर्य समाज के आदर्श एवं सिद्धांत हमें अज्ञानता, अंधविश्वासों एवं कुरीतियों से मुक्त करते हैं। प्रिंसिपल

जे.पी. शूर ने विद्यार्थियों को समाज में फैल रही बुराइयों के प्रति सचेत करते हुए सदैव एवं सुरक्षित रहने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि परिश्रम के बल पर कोई भी व्यक्ति आकाश की ऊँचाइयों को छू सकता है।

स्कूल के प्रिंसिपल अजय बेरी ने सभी गणमान्य अतिथियों का हार्दिक स्वागत किया। स्कूल के दैनिक हवन में भाग लेने वाले विद्यार्थियों को उपहार देकर प्रोत्साहित किया गया। इस अवसर पर शिक्षा जगत के प्रि. डॉ. नीरा शर्मा, प्रि. संजीव कोछड़, प्रि. अनीता मेनन, प्रि. निशि शर्मा, प्रि. सिम्मी लूथरा, प्रि. लखविंदर, प्रि. भारती लूथरा, प्रि. रजरीश, प्रि. सुनीता शर्मा, प्रि. इन्दू अरोड़ा, लोकल मैनेजिंग कमेटी से श्री जे.पी. शर्मा तथा आर्य जगत से इन्द्रपाल आर्य, प्रधान दर्शन कुमार, डी. पी. खन्ना, संदीप कुमार, राकेश मेहरा तथा दिनेश आर्य जैसी गणमान्य हस्तियाँ उपस्थित रहीं। स्कूल के विद्यार्थियों व स्टाफ सदस्यों ने श्रद्धापूर्वक इस यज्ञ में भाग लिया।

श्रीमती चन्द्रवती कन्या गुरुकुल संस्कृत विद्यापीठ का शिलान्यास

दिनांक 29 सितम्बर 2017 को श्रीमती चन्द्रवती कन्या गुरुकुल संस्कृत विद्यापीठ प्रह्लादपुर सोरों का शिलान्यास विधिवत् सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम का शुभारम्भ आर्य कन्या गुरुकुल, शिवगंज की आचार्या सूर्यादेवी चतुर्वेदा के ब्रह्मत्व में यज्ञ के माध्यम से हुआ। तत्पश्चात् सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने ध्वजारोहण किया और ध्वज की महिमा पर प्रकाश डाला। पश्चात् शिलान्यास की ओ३म लिखित ईंट स्वामी आर्यवेश, श्री सुनील कुमार सिंह जनपद

कासगंज के पुलिस अधीक्षक, श्री देवराज शास्त्री अधिष्ठाता आर्य कन्या गुरुकुल एटा व आचार्या सूर्यादेवी आदि ने रखी। इसी बीच आर्य कन्या गुरुकुल शिवगंज की ब्रह्मचारिणियों ने स्वागत गीत व महर्षि दयानन्द पर गीतों की प्रस्तुति दी।

शिलान्यास पर अपने उद्बोधन में पुलिस अधीक्षक महोदय ने इस दिन को ऐतिहासिक दिवस बताया। स्वामी आर्यवेश ने इस नवीन गुरुकुल शिलान्यास की भूरि-भूरि प्रशंसा की और उज्ज्वल भविष्य की कामना की। यह क्षेत्र के लिए अद्भुत

कार्य है। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कन्या गुरुकुल की महत्ता पर प्रकाश डाला। साथ ही कासगंज जनपद जिलाधिकारी मा. आर. पी. सिंह ने कहा कि हमारी भारतीय संस्कृत व भारतीयता गुरुकुल रूपी संस्थाओं में ही सुरक्षित है।

सभी ने भूमिदानदाता श्री देवराज आर्य व उनके भतीजों की प्रशंसा की। एक लाख रुपये की धनराशि डॉ. सूर्यादेवी चतुर्वेदा ने प्रदान कर गुरुकुल का शुभारम्भ कराया। वेदप्रकाश आर्य कासगंज, सोरों ने भी 150 बोरी सीमेन्ट दान देने की घोषणा

की। अन्य सभी दानदाताओं के नामों की घोषणा हुई।

कार्यक्रम के मध्य श्री आर. सिंह राजपूत जि.वि.नि. कासगंज, डॉ. रामप्रकाश वर्णी, श्री देवराज शास्त्री आदि ने भी उद्बोधन दिया। आये हुए समस्त वरिष्ठजनों को शॉल एवं गुरुकुल के नक्शे का प्रतीक चिह्न भेंट किया गया।

अन्त में गुरुकुल की अधिष्ठात्री आचार्या डॉ. धारणा याज्ञिकी ने सभी अतिथियों एवं उपस्थित विशाल जनसमूह का आभार व्यक्त किया।

डी.ए.वी. लॉरेंस रोड, अमृतसर में वेद प्रचार सप्ताह

डी. ए.वी. पब्लिक स्कूल, लॉरेंस रोड, अमृतसर में डॉ. नीरा शर्मा जी अध्यक्षता में 9.10.17 से 14.10.17 तक वैदिक प्रचार सप्ताह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ गायत्री मंत्र उच्चारण और डीएवी गान से किया गया।

वेद प्रचार सप्ताह का शुभारंभ पावन यज्ञ से किया गया। इसमें विद्यालय के अध्यापक व छात्र-छात्राएँ सम्मिलित हुए। प्रधानाचार्य डॉ. नीरा शर्मा ने छात्रों को सम्बोधित करते हुए कहा कि जहाँ भी यज्ञ किया जाता है वहाँ के वातावरण में एक विशेष प्रभाव फैलता है तथा मानव मस्तिष्क पर एक विशेष औषधीय प्रभाव पड़ता है। पर्यावरण को प्रदूषण मुक्त रखने के लिए हमारा यह कर्तव्य बनता है कि भारतीय संस्कृति की अनुपम धरोहर को सुरक्षित रखें एवं इसका प्रचार-प्रसार



करें। प्रार्थना सभा में विद्यार्थियों द्वारा ईश्वर स्तुति उपासना मंत्रों का उच्चारण किया गया। वैदिक चेतना सप्ताह के अन्तर्गत छात्रों को आर्य बनाने हेतु नैतिक मूल्यों पर आधारित गतिविधि करवाई गई ताकि वे अच्छे नागरिक बनकर समाज

व देश के उत्थान में अपना सहयोग दे सकें। इस अवसर पर स्वामी दयानंद जी के जीवन से सम्बंधित घटनाओं पर क्विज़ करवाया गया। आर्य समाज समस्त मानव जाति के कल्याण के लिए है। इसमें सबके हित को ध्यान में रखते हुए नियम

बनाए गए हैं। इन्हीं नियमों के प्रयोजन को आत्मसात करने हेतु आर्य समाज के नियमों पर आधारित प्रतियोगिता करवाई गई।

आर्य समाज की अनेक महान विभूतियाँ मानव कल्याण, राष्ट्र निर्माण व उसकी प्रगति के लिए अपनी त्याग शक्ति व राष्ट्र भक्ति से नई पीढ़ी को प्रेरित करती रहीं हैं। छात्रों को महात्मा हंसराज, स्वामी विरजानंद और महात्मा आनंद स्वामी जैसी महान विभूतियों के जीवन से परिचित करवाया गया। स्कूल की प्रधानाचार्या, डॉ. नीरा शर्मा ने कहा कि आर्य का अभिप्राय है— श्रेष्ठ, इसलिए वेदों द्वारा प्रशस्त मार्ग पर चलकर तथा महान विभूतियों के मार्ग दर्शन से ही आज की पीढ़ी नैतिक मूल्यों को अपना कर ही राष्ट्र की सेवा कर सकेगी और राष्ट्र निर्माण प्रक्रिया में सहयोग देने में सक्षम होगी।

हिन्दी दिवस पर डी.ए.वी. मलांजखण्ड में आयोजित हुए विभिन्न कार्यक्रम

डी ए.वी.एच.सी.एल. पब्लिक स्कूल मलांजखण्ड में हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड मलांजखण्ड ताम्र परियोजना के तत्वावधान में हिंदी राजभाषा पखवाड़ा 2017 का आयोजन किया गया। हिन्दी दिवस पर डी.ए.वी. विद्यालय मलांजखण्ड एवं केन्द्रीय विद्यालय मलांजखण्ड के छात्रों के बीच हिन्दी कविता अंत्याक्षरी व तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। इस प्रतियोगिता में छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। बच्चों की मनमोहक प्रस्तुति ने सबको मंत्रमुग्ध कर दिया।

इस अवसर पर केन्द्रीय विद्यालय के प्राचार्य श्री अमित दहिया ने हिन्दी दिवस की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए छात्रों का मार्गदर्शन किया। कार्यक्रम के अंत में डी.ए.वी. विद्यालय के प्राचार्य श्री आर.पी. मिश्रा ने प्रतिभागियों की प्रतिभा की सराहना करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने कहा कि हिन्दी भारत की आत्मा है जो पूरे भारतवर्ष को एक सूत्र में बाँधे रखती है।

कार्यक्रम का संचालन स्कूल की शिक्षिका श्रीमती पूनम सिंह, सुश्री दिरसाद



करीना व शिक्षक श्री रावेन्द्र जायसवाल ने किया। इस कार्यक्रम में दोनों ही विद्यालय

के शिक्षक उपस्थित रहे। वैदिक शांति पाठ के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

एस.एल. बाबा डी.ए.वी. कॉलेज ने महात्मा आनन्द स्वामी जी को किया याद

ए एस.एल. बाबा डी.ए.वी. कॉलेज बटाला में प्रधानाचार्य डा. वीरेन्द्र भाटिया की अध्यक्षता में महात्मा आनन्द स्वामी जी को उनकी जयंती के उपलक्ष्य में दीवाली की पूर्व संध्या पर याद किया गया। इस अवसर पर समूह स्टाफ सदस्यों एवं छात्रों को सम्बोधित करते हुए प्रधानाचार्य ने महात्मा आनन्द स्वामी जी के प्रेरणादायी जीवन पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महात्मा जी महान् समाज सेवक, वेद प्रचारक, होने के साथ-साथ, आर्य समाज के सिद्धांतों पर आधारित डी.ए.वी. संस्थाओं के निर्माण में भी उनका अविस्मरणीय योगदान रहा है। उन्होंने आर्य

प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के लिए अपने जीवन के अमूल्य 25 वर्ष दिए तथा धर्म और जीवन से सम्बन्धित 30 से अधिक पुस्तकें लिखीं। प्रधानाचार्य ने कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि हम आज जिस शख्स के दिशा निर्देशन में डी.ए.वी. संस्थाओं के द्वारा समाज को नैतिकता की राह पर चलाने का प्रयास कर रहे हैं वह महात्मा आनन्दस्वामी जी के ही पौत्र हैं और इस तरह हम आज भी महात्मा जी की छत्रछाया में कार्य कर रहे हैं। महात्मा आनन्द स्वामी एवं पद्मश्री पूनम सूरी जी समाज तथा डी.ए.वी. संस्थाओं के लिए सदैव प्रेरणास्रोत हैं।

इस अवसर पर प्रो. डा. मंजुला उप्पल,



प्रो. राजीव मेहता, प्रो. डा. मुनीष यादव, प्रो. पवन मलिक, प्रो. नवनीत सिंह धारीवाल, प्रो. संजीव कौशल, प्रो. उज्जल, प्रो. शंकर

दास, प्रो. सुखविन्द्र सिंह, प्रो. सोनिया शर्मा, सहित समूह शिक्षक तथा गैर शिक्षक स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।